

ञानम-विवार

··· 5 @ 0 ···

কাঞ্চন নগ্রপতি নূপ সভাধৃতি। যুশীল মুধার শান্ত স্থমাত স্থরীতি 🗓 🖯 বৃদ্ধি বাহি কলগি লিনিকৈ স্বাতীর। লচণ্ড প্রতাপংতাঁর বেমন মিছির 🏾 অত্ল ঐশ্বর্যা তাঁর কে করে গণেন। প্ৰবোৰ সন্বজ্ঞ বিজ্ঞ বড়ই স্থাসন। প্রজাগণ প্রথা মন নৃপের ক্লপায়। প্রতেপুম করি জ্ঞান পালেন স্বায়। প্রকাদয়ালু রাজা কম্পত্র প্রায়। भावभा अभन्न करन गर्यमा नेमस् । ্ছুফ জনে সঙ্কুচিত ভূপের শাসমে। 🗀 শিক্ত জনে মিন্টালাপে তোবেন যভনে। ্শজার পীড়ার শাস্তি হৈতু রৈদ্য কত। বিদ্যালয় স্থাপিত আছেরে কত শ্তা

नम-विलाम।

তুঃখ করিতে খোচন।

, ল্ সদাভতের স্থাপন। পদাতিক কে করে গণন। ,হার প্রভাবেপ শার্ণকায় বৈরীগণ 🛊 নগরের শোভা যত কে করে বর্ণন। না দেখি না ভান যেন ইন্দের ভবন 🛭 इान् शान लाउ कर कुथ्रम छेतान । .कूटन भूटन मधुकरत मधु करत शान । ছুই ভাষ্যা নুগতির ভূধনমে।হিনী। হাত ভাব কটাকেতে কামের কামিনী 🛊 প্রথম প্রেয়দী পক্ষে পুত্র হর জন। সর্ব্য গুণান্থিত অতি স্কুদুশা গঠন। পরে শুন কনিষ্ঠা পক্ষের বিধ্রণ। रा गर्ड कागल शूक नर्व स्लेखन ह ল্যেষ্ঠা হতে শ্ৰেষ্ঠা সেই অতি ৰূপৰতী। ৰূপে ভার কাছে রতি হবে এক রভি । ভূপতির প্রাণাধিক প্রিয়তমা সতী। সন্তান বিহীনে মাত্র মনে খেদ অভি। সর্বাক্ষণ রহে রামা ঈশ্বর সাধনে। পুত্রের কামনা করে অতি শুদ্ধ মনে 🕼

এই ৰূপে নিভা নিভা করিতে সাধন ! হইল তাহার পরে গর্ত্তের লক্ষণ। अमि नृशस्ति ऋशी इहेरनन छोत्र। দাসীগণে আজ্ঞা দিল শতত সেবায় ঃ ভবে ক্ৰমে ক্ৰমে গ্ৰহ্ম সংস্পৃতি হইল : চ ভবর্ত্তী লক্ষণের পুত্র প্রসবিষ । कि आफर्या (अ मोसमया चि छ। अश्वर: সেবর্ণ দেখিয়া স্বর্ণ হইল বিৰূপ ॥ সংক্ষাহর ৰূপ হেরি চাঁদ পড়ি কাঁদে! াৰু গি<mark>য়ে রজ</mark>্জু দিয়ে দিবাকরে বাঁচে চ इक यदा शुष्प छिनि इस शनत्न। স্মর্গের দল জিনি অতি প্রকোমল। আৰূপ হেরিয়ে ৰূপ দবে চমংকার। দুত প্রির ভূপতিরে দিল সমাচার ।

जिशमी।

স্পুত্র জন্মিল শুনি, আননিত নৃপমণি, অস্তঃপুরে গিয়ে নির্থিল। পাত্র মিক্র সভাজন, শুনি এই থিবরণ, সকলেতে পুলকে পুরিল।

वानमः विषामः।

নিয়াশ্বর জানাথেরে, স্থদারিক দ্বিজবরে, আকাজ্ফা পুরিয়ে দিল ধন। আপামর সাধারণে, তুর্নিলেন বছ ধনে, সংখ্যা তার কে করে গণন ! অমাত্যাদি ছিল হড, অনুচঃ শত শত, ব্যক্তি বুকি সবায় ভূমিল। নৃত্য গীত বাদাভাও, অঞ্চত অভুত কাও, भट्टारम्ब इहेर्ड लागिल ॥ পরে গ্রহ বিজগণে, ডাকি নৃপ **স্থাদ**নে, करहर यह जिन्द्र विवत्र । জবিল আমার স্ত, কিরূপ লক্ষ যুত, গণি তাহা কর নিরূপণ। কোন গ্ৰন্থ কোন স্থানে, ভবিষ্ট্ৰ বৰ্তমানে, कषाक्ष क्लाइटव किटव। কেবা রিটি দুটি কার, নির্ণন্ন করিছে ভার, জম পত্রী প্রকাশ করিবে 🛚 ্মান্তা পেয়ে বুধগণ, নিজ নিজ নিকেতন গিরে বসে পঞ্জিক। লইয়ে। গণনায় হরে ময়, স্থির করি জন্ম লয়, ফলাফল দেখেন ভাবিয়ে ।

जानम-विलाग।

গ্রহ উপগ্রহ চয়, শুভকারী সমুদয়, কেহ নয় তার বিপরীত। मरहास रहेरप्र ठरंद, हाब भजी निश्चि मर्द, ন্পের নিকটে উপনীত। **একে একে বুধগণ, জন্ম পত্রী বিবরণ**, भगनाम याक्ष स्टब्लिश। माम रुप मिता यन, युल स्का म ७ भेल, প্রকাশিয়ে কহিতে লাগিল। কোন গ্রহ রুট নয়, তুট দেখি সমুদয়, धमाताम कुमादब्ब छन । भोरा तीया श्रवाक्त, जगाश माध्य कम. नक भारख इहरव निश्रुग ॥ में बीट्रिश्च हरम ताजा, भारतन गर्वात भूजा, ইৰে কিছু নাছিক সংশয়। म्हेन स्टाउत नाम, स्तरमन खन्याम, बिक्त अभित्व सहा**ल**श । প্রানি পুলকিত চিতে, সভোবের বারিধিতে, . ভাষিতে ভাষিতে স্বত্ন। वेष यम कानि जूर्न, मटनावय कवि भूर्न, ्विनाशं कतिन व्यश्रदन ।

ভদন্তর নৃপ্পুত্র, পেলেন বৃদ্ধির স্থতা, জিনি সিডপক্ষ শশ্বর। পফে পকে মাদ গত, সময় সমূরি কত, গত হইল চতুর্থ বংসর 🛭 পঞ্চ বৰ্ষ হল যবে, দিব্যা শিক্ষা হেতু ভবে, শिक्षा कित्र कित्र निर्देश करे। टाशाटन मरतकः छण, मर्द्व छरन छन्यू छ, শ্রুত মাত্র করে অধ্যয়ন। ব্যাকরণ আদি যত, শিখে শাস্ত্র নামা মত, স্থানবুদ্ধি শ্রুতিধর অতি। ধনুর্ফেদ রাজনীতি, 🖣 ব্যাত্মশঙ্কার স্মৃতি, **উপাখ্যान পाঠে हैंवें मि** ॥ নৃপস্থত এই মতে, পঞ্চদশ বৃদ্ধ গতে, সর্বাস্থ্যে হইল পণ্ডিত 📳 वित्नवर मृत्रवास, वान्त्रार्थ नाहि साक्रे বিজ বলে এইও উচিত 🖟

কুমারগণের নানা মত জীড়া ও নৃপ-তির অপুত্র সহ মুগয়া।

তবে বাজপুত্রগণ মন অভিলাধে। রতে বন্ধুবর্গ সহ হাস্য পরিহাসে॥ কখন বেড়ান অশ্ব গল আরোহণে। নদীতে ভ্রমেন কভু তরণী বাহনে । বিশেষ সাহসী বড় সূরসেন রায়। স্বাকারে পরে কভু কাননে বেড়ায়। স্থীকার করিয়ে তথা মূগ অগণন। প্রত্যাগত হন পুনঃ আপন ভবন।। এই ৰূপ নিত্য নিতা নানা ক্ৰীড়া করে। व्यान्तर्ग वाक्षांत अक खन कात भटत । अक्रीनम कुर्वाक कड़िला रेक्श घटन । ऋशूंद्ध नहिन्नु याच मृत्या काव्रद्ध ॥ अर्थ क्रावि श्रेजनात्ने फाकि नजनात्र । প্রকাশের মান অভিযায়। अनि कृषि भूक्षणा जादर मास नित्य । मिल नाटक नदर वाहेन नाकिरत।।

वामगा-। राजाम

তবে সৈন্যাধ্যকে ডাকি ভূপ আজা দিলা। मटेमरमा नाष्ट्रिक भरव श्रेष्ठा हरेना ॥ নিছ দাল করি রাজা পাত্র মিত্র সনে। वाश्ति रहेरत हत्व कानन अभर्।। गाउक जुतक रेमना जनश्ना मटकर्छ। সজীন চড়'য়ে সবে চলিল ব্ৰক্তে॥ ू ताज्यांनी शाषाहरत श्रादिन कानन। নানা স্থানে নানা শোভা হেরে অগণন।। নানা জাতি বৃক্ষ তার ফল ফুল ধরে। কত মত পক্ষী বসি তাহে রব করে॥ কত চক্রবাক ভাকে বুসি তর্গরে। भन्म भन्म, बाह्न वटर हिन्छ भिक्र करत ॥ পুল্পের সৌরতে বন সৰ আম্।দিত। मधु भान करत जनि रहेत इति है। ভিনৰ দেখিয়ে দৰে পুলুক্তিত মনে। रूपा २८७ शिन अक पूर्शम कान्द्रम ॥ त्म थार्म अञ्चरक नत दितिरह र्याजना तह शक्तभकी दाय दक करत अनुना ।। ভার পরে কিছু দুরে গমন করিল।

হৈরিল অপূর্ব এক মুগ সেই বনে। नृशास्त्रीय त्वरंत्र जात्र यक टेमनागेर्य ॥ প্রমানে প্রিরে তবে কুরঞ্জ তথন ! ভূপের সন্মুখ দিয়ে করে পলায়ন।। प्तिथिदत अभनि जूभ शमिदनम भद्र ! না ভেদিল সেই অস্ত মুগের অন্তর।। তবে শতি বাঞা মতি হয়ে নররায়। ্কুরক্ষের পাছে পাছে ভুরক্ষ ছুটায়।। অখ্যোপরি ছিল নূপ পুত্র সপ্ত জন। टेमना नक हाफ़ि मदव कतिन शयन। তার পরে বহু দূর যুাইতে ষাইতে। ्रकेश्वा (तन मृत्यव ना भान मिथिए ॥ रिन्तासीन ज्ञानी याहा दक करत थलन। ्वन स्थान स्थान रेश स्टब्स नियन । দৈখি হেন অপটন বলে একি দায়। হায় হায় বুঝি কাঁ,বিপাকে প্রাণ বার । कानबनी, मृश देशादत किनन नक्दरे। चुत्रके छाजिन बाब बात वाकि बर्फ बाई मा विश्वादिक एडेट्स बार्ट्स अपूर्ध सर्वे प्रविद्यान मिस्र सन्।

পথ শ্ৰীমে সনঃ ওমে দিগুতম হইয়ে। উঠিলেন রাজ। এক গিরি পরে গিমে। অভি সে সুর্ম্য জান শোভা চমৎকার। সে শোভার ভুলা শোভা নাহি দেখি আর । হরিকে ভূমিতে তথা মুপ নৃপস্কত। 👉 হেরিল যতেক শোভা অঞ্ড অন্ত । কৃত মত ফলবান বৃক্ষ অগণন। কার সাধ্য কেবা পারে করিতে বর্ণন।। আকরোট কিশ্মিশ বেদানা অঙ্গুর 🖟 নিচু পিচ নেও আত্র কাঁঠাল খজ র। नातिरकेल देन जानू, जाम जानातम्। নানা মত ফল কত ধরে নানা রস 🏖 कान द्वारन शुरुशांगारन शुंध नाना जाडि वज्मी लागान होना रवा मुबी बाडि। कारिनी तजनीनत्या नेत्या आदमातिक। গলরাম টগর দোপারি বেত পতি ম ज्याह विस्त्र शकी ना रुग्न भगमा। रिवामन कविद्यापि क्लिक्ट महाना । मरनार्द्ध एक्बेड विम जंबाशस्त्र ।

ভার মধ্যে ছিল আর এক শুক্বর। স্থাচত বিচিত্র চিত্র দৈখিতে সুন্দর। কিবা ভার চুম্ৎকার চঞ্চুর গঠন। স্বৰ্ণ স্বৰ্ণ সম অভি স্থানোতন। গলা বেড়া যেন কত সুদীপ্ত প্রস্তরে। জিনি প্রভাকর প্রভা প্রভা কলেবরে॥ 'হেরি নৃপপুত্রগণ সান্দ হইয়ে। ्रम्थात्वन प्रश्वितंत्र व्यक्तृति ट्लिया । माहिত नवात वासि निर्दाश विद्या ওকে হেরে হ্রথ বাড়ে জুড়াইল অঙ্গ। বলৈ তভু নাহি দেখি হেন অপৰপ। ভুবনা কি দিব তার নাহিক স্বৰূপ।। মীয় জি প্রকাশ করিতে ছুবি বিধি। निकादन निर्माण प्रदेश निर्मिण के सिथि।। **७३ नभ जगनभ ए** दिस्स राजन। मत्मा नुद्रथ मान चटक प्रतिद्व ज्थन ॥ রাকার বুরিংগে ভার শুক পাকীরর। THE PERSON WE SET STATE CACHA PERCH CHA FREIT SEPTE

शरत जुल ठजुलांच नितीक्त करत्। ना ८ हत्त्र शकीत्त्र देशन का उन्न व्यख्दत् ॥ ণরলে ব্যাপিত যেন ভুড়াক দংশনে। তেমতি হইল ভূপ বিহঙ্গ বিহনে॥ कुषा क्या मृत्त श्राम भकी शाम छान। তত্ত্ব করি ভূমে রায় হইয়ে অজ্ঞান।। देनववाणी नम कानी इक रटे कम्र ॥ ধরিবে আমারে ভূপ কি তব শক্তি। अनातात्म भूरमा भारत कांत्वारत शिंख। किन मम अगाअन ना तुनिहत तात । वाल्टकत मल हार धांतरल आमात्र॥ দেখি পকা জাতি বুঝি অবজ্ঞা তোমার। जामि गता ना मिर्टक भारत नामा काता। তথাপি ভোসারে ধরা দিতে ধরাপতি দ माटइ नाय मदन किन्द्र ना नाति नश्क्रीही। भाष्टि गात्र कार्ट्स श्री अगत रत्र छन। मा द्शिता श्रव जात भन्नाय शक्न ॥ नःथि कामात अत्ना किहा मा कतित्व । जब क्लाहरन त्यारम भाषादल भाहेरव ॥ -

यनि भात धक्षांत्र ना इस अञात । প্রতারার্থ কহি বাহা শুন মহাশয় ॥ পক্ষী কুলোডৰ আমি কিছু জাতীয়র। জগতে নাহিক কিছু মন অনোচর ।৷ ভূত বর্ত্তমান ভবিষাতে যা হইনে। নিশ্চিত বলিতে পারি নিশ্চিত জানিরে:।৷ এই মত বাক্য কত কহিমে রাজায়। আশ্রারে গ্রাম জন্য শূন্য পথে ধার।। হেরিয়ে পক্ষীর গতি ইতাশ হইয়ে। मदनाहःदथ अद्याभूदश् अदिन वितिद्यु। ভূপেরে ভাবিত দেখি ভূপতি নন্দন। জ্যেড় করে মৃত্তব্বে করে নিবেদন ॥ কেন পিতঃ হইয়াছ বিরুষ বদন। कि अञ्चादन अहे जादन अब अना मन ॥ চিন্তা পরিবরি গুতে চলহ জরায়। रिक शहरा शकी आमि मिर जाशनाइ॥ नुष्य बाही नुश्रमणि श्राम नमूनस् बहन त्रण भार रार्थ जान गुणि नहा। **ভারিলে ভাবনা মাত্র ভাব না পাইব।** সন্ধ্ৰ বনে কেন এডাছৰ ৱহিব।।

प्तरनं भिद्य मञ्जनं कहित्य मञ्जि भद्र। **लाठाहेद हात्म जारम यछ मूलशद्य !!** ण्डह् यमि नाहि इत्र कार्यात माधन। তথন জানিবে মম নিতান্ত মরণ।। এত বৰি দীঘ থাস ছাড়ি নরপতি। চলিলেন ধারে ধারে স্বপুক্ত সংহতি॥ किछ् भार्य देनना मरक इहेन भिलन। সবে মিলি নিজু রাজো করিল গমন।। নিবানে আসিয়ে ভূপ ভাবিত অস্তরে। কি প্রকারে পক্ষিবরৈ গাইব সত্তর ।। শভার বনিয়ে রায় সকলে ভাবিল। बारम खारम मूजनरण खात्रण करिन ॥ নৃপাজ্ঞাতে বত দুতে চতুর্দিকে ধায়। माना चारम छत् मकाम मा भारा।। **भू**ण **भ मशाम श्रीन खड़ित इंडे**रग्र । ভাবে वनि भिवा निमि भारकत नाकि हा। পিতার উদাস্য ভাষ হেরি পুত্রগ্রা श्रुक्षेत्रष्ट मद्द श्रुनः कदत्र निद्वप्त ॥ অনুমতি হয় বদি আনা সরাকায় / प्तन जिलास्ट्र भारत प्रशिष्

বেই দেখে পাৰ দেই পক্ষীর উদ্দেশ।

চিন্তামণি চিন্তা করি বাব সেই দেশ।

এত শুনি নৃপমণি আননিত কভি।
পুত্রগণে হর্ষমনে দিল অনুমতি।

তদন্তরে দিন ভিত্র করিল রাজন।

বিজ্ঞপদ ভাবি দিজ করিল বর্ণন।

•

শুক্পক্ষী অন্বেষণে কুমার-গণের যাতা।

ভূপতির অনুসতি লবে পুত্রগণ।
ডাকি বত ভূজাগণে কহেন ভখন।।
শুক অবেষণে বাব নৃপের আজ্ঞায়।
পথের যতেক হব্য আনহ অরায়।।
ভূমি আনন্দিত হরে দাসগণ যত।
আনিতে লাগিল ক্রয় প্রয়েজন মত।।
অস্থাধাক জানিয়ে এতেক বিররণ।
স্থাকিত অস্থা সপ্ত আনিল তখন।।
পরে অক্রাধাক অক্র মানিয়ে প্রায়ঃ
ধরে বরে ভূমি দিব অব্যের হালায়।।

পথের সঙ্গল হেডু করি বছ যত্ন। .. वस् भूना इस योद नग्न (नई तद्भा। নিজ নিজ সুসাজ ক্রিয়ে স্থ জনে। প্রেণমিল গিয়ে পিতা মাতার চরগে।। তদশুরে অস্থোপরে আরোহণ করি! গমন করিল ও চক্ষণে যাত্রা করি !! ছাড়াইয়ে রাজধানী আর নিত দেশ। অপর রভেত্ত সবে করিল এবেশ।। नम भनी वृष्ट जीर्भ कंद्रियः जगन । পরে প্রবেশিল এক গছন কানন।। দেখিল তথায় সিংহ ব্যাঘ্র অগণন। ভয়ক্ষর রবে সবে করয়ে গর্জ্য ॥ শুনি সব ঘোর রব ভীত হয়ে মনে। কোথায় আশ্রয় পাব ভাবে দাত জনে।। ट्न काटन शुल्लामान (मियवादे शाह्। कनरान रह दृक्त जाहरत उद्योत ॥ र्ट्स याव्यत्र धरे कति त मनन। मानासूर काल ताल शुळ मां ए जन।। वाहेरत लिशन अक एडकन्नी मैत्रामी नवन भूमिएव आएइ देशकीमान यनि ॥

কুমার সকলে তবৈ হয়ে হর্ষিত।
অতিথি বলিরে তথা হল উপনীত।।
'পাইয়ে সন্যাসী তবে পথিক অতিথ।
সমাদরে সবাকারে বসাল রবিত।।
কল মূলাহারে পরে তুমিল নবায়।
আতি দূর হয়ে নিশি বঞ্চিল তথায়।।
দেখিতে দেখিতে নিশি হল অবসান।
উঠিল প্রভাতে স্বে শ্বরি ভগবান!!
তপন উর্বর দেখি রাজপুলুগণ।
সন্মাসীরে প্রণমিয়ে ক্রিল গমন।।
নানা বাক্য আসাপনে সপ্ত সহোদরে।
চলে সবে এক ভাবে কানন ভিতরে।।

কুমার সকলের কাননে ভয় প্রাপ্তি।

প্রানন্তর সাত জন, এড়াইয়ে সে কানন, প্রবেশ করিল জনা বনে। ভাবি সেই প্রয়োজন, চিন্তা করে সর্বক্ষণ, বিষয় বিয়াদ ভাবি মানে।

কোষা আছে ভোগোয়াব, কোষায় সেধন পাক. क्रियान या स्ट्रेस मिलन। जना हिन्दा नाहि जात्र, पिटा निमि जनियात. শুকুবাৰে চিন্তে সংগ্ৰহন।। পরে টিড়া পরিহরি, টিস্তামণি চিস্তা করি, শীঘ্ৰ গতি গদান করিল। ্তথা হেরি ঘোর বন, ভয়ে ভীত সাত জন, সরম্পর ভাবিত ইইল ॥ উফ রুক্ত নানা জাতি, সমভাব দিবা রাভি. रहरी बीका ना भाग मिलिएक। ভাষ্টে পশুগণ সৰ, করে ভাক্তর বুৰ, 🤏 व उद्भ ना शास्त्र एकिएउ। সচিন্থিত হয়ে পরে. উঠে উচ্চ বৃফোপরে, (मर्थ स्या हल अस्राहत। দেখিতে দিখিতে নিশি, উপনীত হল আদি, ' ं प्रार्थ कंछ क्षिमी चूला॥ महिल इरेश शहर, मुद्ध गाहि वाका महत्र, হেরে মতে মর্পের মূরতি। অতিশয় ভয়ন্তর, গজে বেন জলধর, নিশাবেতে প্রনের গতিয়া

कीं विश्व शकी खत्क, धमव पिश्व हत्क, বলৈ রক্তে কর নারায়ণ ! मिक श्वरण क्रशा कति. जाप केत्र मदेव हति, নাম ডব প্রিডপাবন !! এইৰূপে অন্ধ্ৰ নিশি, গত হল বুকে বৃষ্ণি, অহি সব গেল নিভ স্থানে। स्वत्मन करह उरव, मन वांका धन भरत, श्वरंश निज्ञा याथ इस अरम ॥ চিন্তা লা করিছ মলে, আমি রব জাণারণে, ख़ इत्र भ इहेरव जामाव। এতেক গুনি বচন, হুক্তেতে করি শরন, নিতা গেল ছয় শুণাগার। हिन मटि निर्भि लिन, जांतू जानि अदानिन, রুক্ষ ইতে নানে সাত জন। আংরোহিয়ে অস্থোপরি, চলে দবে সুরা করি: পশ্চাত্ করিয়ে সে কানন ॥ হেন মতে কত বন, ছাড়ি রাজ পুত্রগণ, ें हेमावर्ड (मर्ग डेमनीड । মরি কি দেশের শোভা, দেবতার মনোলোভা

গৃহ ছার পাবাবে মুচত ॥

दितिस जान्तर्श यक, मदन इत्य इत् यूट, प्तदर्भ मृद्यं नगत् अभिद्य । मकनि छेखम (शह, मानव नाहिक (कह, कि हू खित्र ना शाय जाविद्य ॥ অপরূপ দেখি ছেন, কহিতেছে সমূত জন, कि चान्ध्या विधित एकन। ना प्राचि ना छेनि कारण, जीव नाष्ट्रि वामञ्जारन, जादन मरन क जात कमन ॥ তবে সপ্ত নৃপসূত, দেখি দেশ এবভূত, সচকিতে চলিল নগরে। স্থুপের আগার যথা, উপনীত হয়ে তথা, প্রবৈশিল পুরীর ভিভরে॥ চারি দিকে বত হেরে. কে তাহাঁ বর্ণিতে পারে, মণি চুনি পরশ পাতর। ্ধাদ্য দ্রব্য নানা মত, দেখিতেছে অপ্রমিত, किछ काथा नाहि सिट्थ नत ॥ शदत मख मेट्राम्ट्र, मट्न मट्न हिन्छ। कद्व, া তার পর প্রস্পার কর। जार्गा गृहा जाइह हरेंबे, उन्छ जानिय मर्द्व, यक हक काराव जानज म

গুনি দ্বিল স্বতনে, কহে রাজপুতা গণে, রবে সবে হয়ে নাবধান। জানিলে এস্থাচার, আসি চুক ছ্রোচার, নিশাচর চরে লবে প্রাণ।।

স্থ্রসেনের রাক্ষণ বধ ও ভাত্গণের বিচ্ছেদ।

এত বলি সবে মেলি মন্ত্ৰণ করিছে।
তদন্ত জানিতে রহে অন্তর হইরে।।
গোপনীর ছার এক দেখিতে পাইল।
রাজ পুত্রগণ সেই পথে প্রবেশিল।।
তথায় দেখিল এক রমা সরোবর।
মনোহর পুজে দাশন তাহার উপর।।
যুতি জাতি মলিকা মালতী মনোহর।
চল্পক কদন্ত বক্ কিংসুক টুগর।।
বেল সেকালিকা আদি গলা মনোরম।
বেল সেকালিকা আদি গলা মনোরম।
বেল স্বৈদালিকা আদি গলা মনোরম।
বেল সেকালিকা আদি গলা মনোরম।
বেল স্বিদ্ধালিকা চল্পক বক্ল।
মার প্রেম্ম সক্রছের ধায় জ্বিক্ল।।

চন্দ্রমণি বুর্যামণি দেখিতে বুন্দর कार्थन पर्यन (ए। दल वृत्कत है अत ।। সাল তাল তমাল হিন্তলি গাম্ভারী। पास जाम चंडा द भंदान माति गांति ॥ हेटानि परमक दक्क रक नरत र्वम। পকিগণ গান করে তাহে অনুক্ষণ।। े दिनित्र इंड्रेन सूथी मत्त्रावत छन । नाना वटर्न ज्ञारन ज्ञारन श्रकुल कनल ॥ ্যুছ মুছ কুছ কুছ ডাকে পিকগণ। मन्द्र मन्द्र शक्षतरह वर्द्ध खञ्चक्त ॥ বার মাস বাস তথা করে রভিপতি! কান্তা সঙ্গে মনোরঙ্গে স্কথে করে রতি॥ সেই উদ্যানের মধ্যে বাঁধি অশ্বগণ। পুরীর ভিতরে সূর্বে শরিল গমন।। ट्न कोरन मिबोकेत हरन अञ्चाहरन त्म तकनी त्मरे इत्न विक्न मक्तन।। প্রভাতে উঠিয়ে সবে করিল যুক্তি। करे छाटन किছू मिन कत्रिव वर्गाल ।। निक कार्र्या वर तारका कतिएत समन द्यान शादन नाहि द्रिति मनात्र ध्रमन ॥

क्रक क्रम थाकि (इथा करह रक्रम) নগর অমিব মোবা ভাই ছয় জন।। তবে সভাকার মত একই হইন। क ब्रह्म्यः वनि भग्नेत्रेत्रं कि**का**तिन ॥ भरत एवं कुमारतत कनिष्ठे त्य अन्ध वत्व अस्विक् पानि कतिए उद्यन ॥ अनि पूर्ण देश इस दाजात मसन। ध्यादताची नेसद्द्वदेश कृतिन नामन ॥ श्रामापि कशिद्य (स्था किंग्छे र स्ट्रा वर्षा वृत्रा लाग् त्यत्र कृत्ते आरम्बन ।। রস্বন শুস্তত করি অতি কুতৃ্≢ংল। इन्छ श्रम भो छ कदियादत यात्र कटन ॥ সরোবর তীরে বেই করিল গমন ! **एन ७क इम**्कात रेम्द्रत घटन ॥ रिकंप्रे भारतात এक ताकनी आहेत। নিশ্বাদেতে বড় বৃদ্ধি হইতে লাগিল্য জন খুনা জদ জিনি উদর ভাহার। नाजम समात नाम मन्दर छेहात । সরেশ্র ঘট হইতে রাজার কুমার। দেবিল তাহার ৰূপ বিকট আকার 🛊

গোপনীয় স্থান এক আছিল বেধার ! ভয়ে নৃপপুত্র গিরে প্রবেশিল ডায় 🛚 দৃষ্টি করি চতুর্দিকে রাক্ষদী তথন। দেখে কত নানামত ত্রা আয়োজন। রাক্ষনী ভাবিছে মনে ইকি অসম্ব। थाना जया सिथ एक ना सिथ भानव। া এত ভাবি গৃহদ্বার সব অ**ন্নেধিল।** कान दारन किंदूई नकान ना मिलिल । रत्न चार्कि विधि यूबि वन क्रभाविक। সেই হেতু খাদ্য দ্রব্য মেলে অপ্রমিত। এত বলি সমুদয় করিয়ে ভোজন ! ্করিলেক স্বস্থানে প্রস্থান সৈইক্ষণ॥ তবে কিছু কণ পরে নিজ্জনি হইতে। আইল নৃপের পুত্র পাবার পুরীতে। **मिथन त्राक्रमी चामा कुरतहरू जाहात**। সামান্য ৰূপেতে পাক করে পুনর্বার ॥ ইলোমধ্যে এল তথাছুর সহোদর 🖟 😕 সাহার করিতে বসে হরিব অন্তর । না হয়েল তুপ্তি কারে করিতে ভোজনা শ্বভাহ্য করিল সবে তাহার রঞ্জন 💨

श्वि क्रुक्त इरस धीत ना कहिल कथा। किन्नुइ ना विवादनन ब्राक्षमी वाबछ। इ পরে এরপেতে অন্যে করিল রন্ধন। পূর্ব্ব মত রাক্ষনী তা করিল ভোঙ্গন 🛭 क्रिक्र क्रांदर त्रांकभी बुखान मा नित्त । क्राय इत्र मद्भारत मकान भारेता॥ এই মতে ছয় দিন হইল ভথায়। मक्षम क्रिटम तरह मुत्रसम तास ।। স্মার সবে গেল পরে ভুমিওে নগরে। বিধির নির্পান্ধ কথা শুন তার পরে !! স্নানাদি করিয়ে পাক করে মনোমত। বছ বিধ রস ভার নাম ক্ব ক্ত ।। चमल्डात मरतायरत त्राकात ननारः। হন্ত পদ খৌত হেডু করিল গমন। পুনর্কার পুরীমাজে আসি নৃগন্ত। বেড়ান অঙ্গন মধো হয়ে হর্ষ যুত।। তদন্তর নিশাচরী আসি উত্তরিল। **एटा कुमारतरत वज् मक्षके इंदेन ।** बला जाजि स्थान हरेन जिल्लाता মনোভুথে নর মাংস করিব আছার।

নিতা নিতা মোরে ভাত্তি থাক লুকাইয়ে। আজি সোরে বিধাতা দিলেন নিলাইয়ে 🛊 এত বলি জ্বত চলি যায় ধরিবারে। कृगाद्धः किছू राज ज्य भाहि जाद्ध ॥ বলে আজি সপ্ত দিন আছি বাস করি। अक मिन मिथि नाई अधन सुनाड़ी 🖁 अहे करमा अ मर्शदा माहि खानी लगा **अप्रचे। र्टे**ट नचे स्टार्ट ब्राम ह ভার সমূচিত শাস্তি দিব এই কণে। অচিরাত্ পাঠাইব শহন সদনে। क्ष विता महावनी सुमक्त इंदेस। নিশাচরী সঞ্জে বোর যুদ্ধ আর্ড্রিল। দ**ত্তে লণ্ডে ম**হাবীঃ ধরি বা**ছ** বলে। সে নিশাচরীরে ধরি পাড়িল ভুতলে। তাহে रूमि म ताकभी कुमारत उथनी ধরি করে ভূমিপরে করি**ল পতন**। कथन कुमात रूपि ताकनी कथन। ঘোর তর হয় রণ কে করে বর্ণন।। কেছ কার্টর নাহি পারে ছুজনে সোসর। সাতঙ্গে মাতঞ্ যেন পর্বত উপর।।

এই ৰূপ মহা যুদ্ধ রাক্ষী কুমারে। বিস্তারিত দে সকল কে বণিতে পারে।। পরে ধীর ধরি শির করে মুস্ট্যাহাত। শব্দ করি নিশাচরী হইল নিপাত।। হেরিয়ে হরিষ অতি হইয়ে কুমান। লস্ত পদ ধৌত করি এল পুনর্বারে K কেতা ছয় জ্রাতা শব্দ গুলিয়ে অবংগ। দে নগরী পরিহরি ভয়ে গেল বলে। চলিল দক্ষিণ মুগে মুপপুত্র গণ। ভয় তালে নিশ্বাস ত্তাল সহে ঘন ! বলে সবে ছুর*দু*ক ছেডু কট কড। রাজ্য ভ্রকী ধন নফী অনিট সতত । একি দার প্রাণ যায় উপার কি করি। অকুল সাগরে ভাসি নাহি কুল তরি॥ এই মত রাজসুত গণ ভাবি পরে। উপনীত হইলেন উদয় নগরে॥ তথা দেখে পুরী শোভা অতি মনোরম। সুরাসুরে তিন পুরে নাছি তার সম। **जन्छदत्र भीदत्र भीदत्र क्षाद्यदम् मर्गदत् ।** কে পারে বর্ণিতে যত অন্তত ভিতরে ॥

ভার পরে ভ্রমিয়ে স্থানে স্থানে ভাহার। मिश्रिण व्यश्र्व धक भूती एमएकात । মনে ভাবে হবে এই রাজার ভবন। হারেতে দেখি যে ঘন্টা স্পতি স্থাশেতন ৷ এসব দেখিয়ে ভবে সকল কুমার : ভারপালগণে কিজানিল সমাচার। শুনি দারিগণ কতে সবিশেষ তার। সোম দত্ত নাম ভূপ এই পুরী তাঁর। ষ্কী। যেই আছে ভার শুন বিবর্ণ। বাজ কন্যা সকলের বিবাহ কার্ণ।। সপ্ত সংহাদয়া ভারা শরদের শশী। विकाश रम भव कराश स्मावन डेर्समी ।। ধরাতলে নাহি আর তাঁদের সমান। স্থির নৌদামিনী প্রায় হয় অসুমান।। সকলে সমান ৰূপ সমান আকার। কিছু মাত ভেদ নাই অতি চমংকার।। বড় ছোট নির্ণয় করিবে যেই জন। নে ছয় কুমারী তারে করিবে বরণ !। হারিলে করিবে কারাবন্ধ নৃপমণি ! এতে যাঁর ইচ্ছা হয় কর ঘণ্টা ধনি।।

রাজপুত্রগণ শুনি এ্নন রুক্তান্ত : কন।গেণ প্রেম আশ হইল এক। । त्मरे बाद्य व्यामि कृत्य इत मत्रामद्य । করি**ল ঘন্টা**র রব নবে পারস্পারে 🛊 यन्त्री त्रव धानरण खनित्य नत्रवातः। দুতেরে প্রের^ণ কৈল আনিতে সর্বায় ম দু তর্মে দ্রুত গতি ভূপতি ভাজায়। উপনীত রাজপুর সকলে বথার 🖟 তদশুর ভূতাগণ করি সমদের ৷ নবার সভার লয়ে করিল গোচর।। স্কবোধ নূপতি অতি রাখিয়ে সক্ষান। नमान्द्र नविकाद क्रिन भारतान ॥ পরিচর লয়ে পরে আহ্লাদিত মনে। বদাইল যত্ন করি রত্ন সিংহ:সনে 🛊 খান্য ক্রবা আনি পরে বিবিধ প্রকার। রাজপুত্রগণে স্থাবে করান আহার। ভার পরে সভাকারে করে নররায়। मम १९ विवर्ध छन भ्रभूषां ॥ वेकाक्विं क्ना। यम चार्ड मक्ष क्रना। ছোট বড় চিনিলে পাইবে সেই জন।।

না পারিলে কারাবন্ধ রাখিব ভাহারে। অনুমতি হয় যদি অ্বানি সবাকারে 🖫 এত শুনি কংই ছয় রাজার কুমার। ছোট বড় চিনিববিচিত্র কিবা তার।। একথা শুনিয়ে ভুক হয়ে নৃপ্সণি। भाभी প্রতি আজ্ঞানিল আনিতে নন্দিনী।। নানা অভরণ অঞ্জেকরে বালমল: हत्रा सुशूद **फिल न**श्राम कडान ॥ গৌর অন্দে নানা রঙ্গে করি দিল শোলা। एशिए अमर्ति व्या जगमाना (बाजः । স্থবেশ করিয়ে কন্যাপণ স্থীন:ন।। সভা মাজে এল জিনি গজেন গমনে ! দেখি ৰূপ অপৰূপ ভাতে ছয় তাৰে। চিত্তের পুত্তলী প্রায় দেখে কন্যাগণে।। চিনিতে অশক্ত হল জানিয়ে ভূপতি : কারাবদ্ধ করিবারে দিল অনুমতি ৷৷ আজ্ঞা পেয়ে ভূতাগণ লয়ে দবাকারে यना थना वर्भी**मत्म द्वारश काद्राभारत** ॥ হেন মতে রছে তথা রাজপুত্রগণৰ পরে কুমারের কিছু শুন বিবরণ।

রাঞ্চনীরে করি বধ হরিও অন্তরে। স্থান করিবারে পুন গেল সরোবরে 🕯 'পুনর্বার পুরী মাজে আসি নৃপস্ত। থালা দ্রবা যত সর করিল এততে 🛭 लिया व्यवमान इझ भारत मरन महन ! কিংহতু এখন না আইল আতুগণে 🛚 তদন্তর বহিছারে বাহির হইয়ে। করিল অনেক তত্ত্ব নগর ভাষিয়ে 🖟 क्रिक कारण क्रिक वास्त्र कार्डेड । ग्रावाकृश्य शुनस्तात गृरङ् अर्थानन । ভারাণার বিচ্ছেদে কুমার ভাবে নমে। प्राह्मत मा इल फुल त्रिल नेत्रतम् ॥ বহুমত বিলাপিরে কররে রোদন : বলে কেথা মোনে তাজি নেলে ভাতৃপণ ঈশার নির্বন্ধ কর্মা ত্রিয়ে তথ্যা প্রবেধিল আপনি সে আপনার মন ! অনন্তর বিভাবরা প্রভাত হইল। ছুর্গ। জুর্গা স্মরি রায় উঠিয়ে বসিল।। প্রাতঃকৃত্য যে কিছু করিল সমাধান। তদন্তর চিন্তা করে এৰপ ৰিধান ।।

ক্ষায় কাতর আছি করিয়ে আছার। যথা ইচ্ছা তথা ঘাব এই যুদ্দি সার।। বিজ বলে ভাল যুক্তি রাজার নন্দন। চিক্ত স্থির কর কাষ্য হইবে সাধন।।

কুমারের ৰূপবৃতী কন্যা দশনে আসক্তি।

তবে নৃপত্ত, অতি চিন্তায়ুত, তাংগ ক্থান্থিত, অধোরদনে।

শেকে জরজন হইয়ে অধর, ভাবে নিনন্তর,

षाथन भरन ।

বিষম আঘাত, করে করাথাত, গালে নিয়ে হাত.

বসিয়ে ভাবে!

टत्फ टट्ड खल, जन्नात जनल, इट्डा 🖄 दल; .

ভ্রাতা অভাবে।

অমূলা রতন, ভাই ছর জন, কোথায় গমন, করিল হায়।

জানিয়াছি স্পান্ত, অদৃষ্ট অনিট, ডাই হেন, কৃষ্ট, বিষয় দায় ঃ এত তাবি বায়, না দেখি উপায়, চলিল ভুরায়, म मद्दानद्व ।

দৈবের ঘটন,'শুন বিবর্ণ, স্মূল্য রুত্ন.

(मर्थ मञ्जूत ।

 क स्वपनी, जनक (माहिनी, कृतक नधनी, ভটেতে বসি।

करत धनी श्राम, कि कव वार्थाम, धम पीक्षियात, **डिमश अभी** ॥

য়াপি ত্রিভুবন, আছে যত জন, সদুশ তেমন,

কহি রমণী। কিবা সে স্থসভা, স্বতি নথা তথা, নানা রস কাবা, জুনে সে ধনী॥

গজেল গামিনী, ভাষা সুধাজিনি, পিক গুনি ধনি,

वनि शामद्या

উक्क छेलमा, माति फिटल मैं।मा, तक्का उक्र नमा, কে বলে তারে 1

नश्रम रहिते।

তার ক্লি মাজে, কুচদর সাজে, অধুন্ধ বিরাজে গোপন কৰি ৷

ছেরি চন্দ্রানন, ভাষি যে তপন, অতি ছঃগী মন, গগনোগরে।

নেত যুগ খীন, হৈরিরে ছরিণ, ভাবে নিশি দিন, বন ভিতরে॥

নেখি ওঠাধর, বিষ ছংখান্তর, হইয়ে অন্তর. পলায় লাজে।

জতি দঃথি মনে,নিন্দিয়ে আপনে,পশিল গোপনে অর্ণ্য মাজে ॥

কিবা দন্ত যুভা, হেরিয়ে মুকু হা, রত্নাকর যথা. তথা প্রবেশে ্

রত্ব পেল যবে, তাহার প্রভারে, রত্তাকর তবে, নাম প্রকাশেয়।

পদের বর্ণনা, কে করে বলনা, না পাই ভুলনা, তিন ভবনে।

प्रतिश्व रंग शन, यात्र दर विशव, काटमत मन्त्रम.

प्रतिथ रंग थरन ॥

নিক্ষণকৈ তার, কথে কণ্ঠ হার; অতি শোভাকার, কুচ' উপরে।

ভার গাত্র গন্ধ, পাইদে আনন্দ, সদা করে ছন্দু, অবি চকোরে॥ দেখি সেই ৰূপ, কাম রমকুপ, সে নাগর ভূপ, বিৰূপ হল।

শাইদের শাশী, ভূতলেতে থসি, কিষা অংশ মিশি: স্থানম নিল[া]।

তানে রাজস্কুত, হয়ে হ্রবিত, শোক হল শত

कारमत बदल।

ক্ষুধা গেল দুরে, প্রেম স্থথা ছেরে, চলে ধীরে ধীরে. রমণী পাশে।।

भक्ष পেষে बनी, मत्म छत्र গণি, পশিশ अमनि, क्षेत्रन माटक ।

জীবনে পশিয়ে, ধুধ ফিরাইয়ে, সেরুপ হেরিখে। পঞ্জিল লাজে ।।

নখিয়ে লাবণ্য, বলে ধন্য ধন্য, শূন্য কবি শূন্য, আইল শনী।

কিবা মুখ শোভা,মরিকিবা প্রভা,রতি মনোলোভা, হবে সে দাসুী॥

কামের কামান, করিয়ে সন্ধান, বধিবারে প্রাণ, এজন এল।

ও শে**ল সন্ধানে,** না বাঁচি বা প্রাণে, মরি মনাগুনে, কি করি বল ॥ মদন কালায়, মরম গলায়, কিসে রাখা বাস্ত্র, একুল মান।

যদি এরে পাই, তবে সে জুড়াই, নতুবা র্থাই, এছার প্রাণ।।

এৰপ দেখিয়ে, মনেতে ভাবিয়ে, ঈষদ্ হাসিয়ে. কৃহিছে ধনী।

কে তুমি হেতায়, কহ রদময়, নিফ পরিচয়, বল হে গুনি॥

(पद कि भानव, नः इत्व मानव, मत्नत्छ मञ्जव,

হয় ভোমারে।

কিবা মায়া করি, এলে এই সুরী, বল সভ্য করি ভুমি অংম রি।।

কিবা তব নাম, কোথা তব ধাম, ওহে গুণধাম. মিথ্যানাকবে।

আমি হে অবলা,তাহে কুলবালা,মোরে করি ছল। কি, লাভ হবে॥

षिक्र वटन खन, त्क्स त्ना अमन, मिनक्स मनन, इहेरस छात ।

रष जन रायमा, भिनास राज्यमा, विधित घटना, भिनाम जन्म।

কুমার কপবতী উভয়ের পরিচয়।

নরেশ নন্দন শুনি এতেক বচন ' মৃত্যু হাসি মিটি ভাষি কহিছে তথ্ন। राम इत्रामि धनि किছू नांहि छए। 'দেবতা দানব নহি শুন পারিচয়।। **क्षर्भीत्थ वक्षत्रात्का काक्ष्म नगत**ः। শ্রেষ্ঠ তম অন্তুপুস খ্যাত চরাচর।। সভাগতি নামে বাজা তথায় বসতি। धन धाना পরিপূর্ম ধর্মশীল অভি।; खन क्लार्छ कर्न व्यक्त खन्ना गठन। তুই ভার্য্যা নূপতির সপ্তম নন্দন।। কনিষ্ঠা পক্ষৈতে স্থত আমি রসবভি। **সুরসৈন বলি নাম** রাখিল ভূপতি। এক দিন মূণয়ার গিয়ে পিতৃ সনে। আশ্চর্যা হেরিয়ে আসি ভাই সাত জনে। সবারে পাঠান পিতা তার অস্বেষণে। বহু স্থানে ভ্রমি পরে আসি এ ভবনে 🛚

ক্রমে ক্রমে নগরেতে করিয়ে ভ্রমণ। প্রাণী মাত্র লোম স্থানে না পাই দর্শন (দেখি: য অদু ং কাণ্ড না বুৰিয়ে অন্ত। নপ্ত সহোদরে রহি জানিতে ভদস্ক। নিয়ম করিয়ে মোরা ফিরি ছয় জনে। এক জন থাকে মাত্র বন্ধন কারণে ॥ এইবপে ছয় দিন 'মতীত হইল ; অবশেষে মোর পালা কালি কয়েছিল 🛊 ভামায় রাখিয়ে তাঁরা ছয় সংহাদয়ে। অশ্বাক্টে গেল সবে ভারিতে নগরে ॥ পরে আমি খানা দ্রবা ক/র আরোজন। रहन काटन खन अक टेर्नुटवंड पर्छेन I এল এক নিশাচরী বেলে ছড়িশয়। দীর্ঘাকার কলেবর দেখি ভর হয় 🏾 মেঘের সদৃশ তার গভীর গর্জন। ' আইল আমারে পরে করিতে ভক্ষণা। তার পরে মোর সনে হল হোর রণ। রণে পশি সে রাক্ষসী হইল পতন। তদন্তরে মোর সেই ভাই ছয় জন। কোন স্থানে গেল তার না জানি কারণ।।

সেই হেডু চিন্তার্ণে হইয়ে মগন। দ্বান হেতু আধি জলে হইয়ে বিমন !। পরেতে তোমারে হেরে গেল সেই দুখা दिस्मय दा। कुल हिन्छ इस्टात चव मूर्थ ।। বর্ণনা অতীত তব ও বিধু বয়ান। কাননে কুরজী করে কটাকে পয়ান।। মৃদ্রে আমার আজি আনন্দ না ধরে। ম্বিৰ ম্বেতে মাত্ৰ মিলন সভুৱে 🛊 कि नाम ४ इ.इ. जूमि वन छ्तकिनि । কোথায় বসক্লিভৰ কাহার ননিনি ৷ काराज क्षरा गांति विष्ट्रपत श्वा। এসেছ এখানে ভূমি করিয়ে আকুল। দেবকন্যা হবে ভূমি হেন দয় মনে। মোরে হেরি জীমতন পশিলে কি কারণে।। প্রাণী মাত্র নাহি হেতা শ্বাশান থেমন। নারী হয়ে এলে ভূমি করিয়ে কেমন 🛚 বিতারিয়ে শে সকল কছ স্থামুখি। শুনিলে তোমার বাক; হই তবে স্থী। ধনী বলে শুন ওহে রাজার কুমার। মম পরিচয় কথা কহিব বিস্তার।

(इशः हेनावर्ड नात्म हिल्म ब्रास्टन। धन थाना शूर्व भाना विथा क जुदन॥ এক রাণী ছিল তাঁর নাম প্রভাবতী। অতি সতাঁ ঋণবতী পভিপ্রিয়া অভি 🛭 তার গাওঁ জন্ম মম নাম ৰূপ্যতী। বিধির বিধিতে ছেন হুইল চুগতি॥ বেই নিশাচরী ভুমি করেছ সংহার। সেই চুটা হলে এই রাজ্য ছারখার। এদৈশে বসতি করি ছিল যত জন। कीर माञ ছिन यह करत्र्ष्ट उक्ता।। रमादर मिखदादा क्रकी यथन जाईल। জীবনে পশিয়ে মম জীবন রহিল। मिबीत क्रभाव भारे कीवत्म व्यालव । ভয়যুক্ত হয়ে তথা বঞ্চি রসময়। তোমার কারণে নিত্য পূজি ত্রিলোচনী ৷ আজি তা সফল হল আইলে আপনি। নারীর জীবন বৃথা পর্তে নাহি যার। অনঙ্গেতে অঙ্গ খনে করিয়ে প্রহার। এইতে। উদ্যান আর কোকিলের স্বরে। অলির ঝকারে যেন শর হানে সারে।

ष्यदला পाইয়ে একা বসত্তের সেন একত इहेट्स यदध नाहि शुरन भाना ह .कলেতে নিবায় অ্যি শান্তের লিখন। অলে থেকে আয়ো জলে একি জন্তটন। वृद्धिन्। य व्यन्त भ कत्नार निर्देशः। **८८१मानम मिलन दिहत्म ना**ष्ट्रि गांत्र । এত रति निकटिए छ जा ब्राथशानि । নাগরের গলে দিতে পিরীতের ফাঁসি।। রামারে নেথিয়েনুপ স্কৃত হর্ষিত। क्षांदर क्षांशाकात । अध्य स्ट्रेन अधिक । কুমার পরসানদে কহে কন্যা প্রক্রি। শুন শুন প্রাণপ্রিয়ে আমার মিনতি।। मरम र्टल्ट् एनर कुःच मोनानटल। আজিতা শীতল কর তব প্রেম জলে। কি করি মনেতে সানা না মানে কিঞ্জিত। এর চেষ্টা কর প্রিয়ে যে হয় উচিত। তদন্তর বিধুমুখী বিভোর হইয়ে। বিশেষ বাাকুল হল মন্মথে মাভিয়ে। বুকিল নাগর মম উপযুক্ত বটে। বিজ কহে হ্রস্থ্য ন স্তুজন আদি ঘটে।।

কপবতী কুমারে গান্ধর্ব বিবাহ।

ভবে নাগরের মন, কটাকে করি হরণ. লয়ে চলে রাজার ভবনে! করেতে ধরিয়ে কর, করি বহু সমাদর, ৰদায় রতন সিংহাসনে।। তদস্তর উদ্যানেতে, গিয়ে অতি পুলকেতে, নানা প্রত্পা করে আহরণ। গাঁথিল অপূর্বে হার, তুলনা নাহিক তার, मुक्ष इस प्रशिटल मनन ! त्रिका त्रित्र कल, माजाईन मरनामल, মনোরথ করিতে নির্বাহ। লজ্ঞা ভয় পরিহরি, নানা পরিহাস করি, করিবারে গান্ধর্ব বিবাহ 1 उम्ख्र नृপमुङ, मत्न इत्त्र इच्युङ, ভাবে কডক্ষণে হবে নিশি। विधि कि ममस इंद्रव मिवाकत मृदत्र बाद्य, শীতল করিবে আদি শশী॥

ভাবিতে চিস্তিতে পরে, দিবাকর গেল দুরে, নিশি আংসি দিল দরশন ! ्रशक्त निज स्थान, कतिरलन नेशियमान, দেখি দোঁছে হর ্ষত মন h यत्ना क्षर्य धनी भटत, शृष्ट्र,याना नरम करत, नागरतत गरम भवादेन। ভাচে হয়ে হ্রষিত, র্ষিক রুদে মোহিত, তাবি এক মাল্য করে নিল।। **िक्षा भारत मद्योभल, यम्या वस्त्र क्रिन** শিহরিয়ে উঠে রাজবালা। हिंदिक वनम हैं। में, मिटन शिन है। दन हैं। में, অন্তরে জ্বিল কাম স্থান।।। মত্ত হল রসরাজ, সাধিতে আপন কাজ, र्हेलन हक्ष्म व्यवतः। হ্রে অতি ব্যগ্র মতি, যাচ্ঞা করেন রতি, রপবতী কচে ক্ষমা কর :৷ আছেতো যামিনী নাথ, কেন হেন অকস্মাত্, অঞ্ভব শরের সহায়। পরণে আমার প্রাণ, হয় এই অমুমান, मति दुवि भनन षालाश ॥

একে সন্তাপেতে মরি, নাহি নিবারিতে পারি, কত সব অবলা সরলা। দিক বলে নাহি বাদ, সাধ দোঁতে মনোয়াদ, নিবারণ হবে সব তালা।।

রতি ক্রিয়া। তবে নৃপস্থত, সমনে পীড়িত, धविल काश्रिमी शत्ल। क्रमात वरेत्, यमम पृथित्य, वनम इतिल ছाल । कृष्ठ यून करत, धतित्व मिहरत, কছিছে করুণা বাণী। मा कामि त्रमण, एट्ट खाण धन, ক্ষহ নাগ্র মণি 🛚 উতলা इंड्रेट्स, कलिका मलिएस, रल कि इहेरव वँधू। ফুটিলে সে কলি, ভবে আসি অলি, পিরে দে ফু:লর মধু!! क्यान मारुटम, अनव व्यटम, हानिए कारमञ्ज्ञानत ।

ওচে রসরায়, ধরি তব পার, আজি মোরে কবা কর। শুনিয়ে নাগর, রুমের মাগর, কহিছে সূজ্বী প্রতি। भटर मा याउना, कि कति दलमा, প্রিয়ে দান কর বভি। डा**किरल रम ज्या, इंट्रेट्ट नि**र्च्य, ভাব ছে কেন প্রলয় । ত্যন্তি হৃদি বাস, পূর্ণ কর আশ, বাজে নাছি প্রাণে সয় । এতেক বলিয়ে, সহলে ছলিয়ে. कमत्ल शिला चिला। महर्म महर्म, जुनि निल कार्य, ध्रिए। कमल कलि।। 'ভবে রসবতী, কাজে দিল মতি, नाटक क्षिट्ट बक्रबरमा ফুটি প্রেমকলি, উঠিল উথলি, কাম বন তাহে ভাসে !

स्रुतम्परनत **खक्शकी ज्राह्म** १००० ।

बहे ब्राल नाशंद्र नाशंद्री ग्रुहे छन। निङ्ग नवंद्रास करत राष्ट्रनी वक्षन । দোহাকার প্রেমরসে তুজনে মোহিত। নানা মত করে কেলি হয়ে হাট চিত। किष्ट्र मिन शहर राज्य नहरूम नम्म । বলে শুন প্রাণপ্রিয়ে আমার বচন।। তব প্রযো**জনে** কিছু मা আসি বিদেশ। মম প্রয়োজন আর আছমে বিশেষ।। এক দিন পিড় সহ যাইয়ে কাননে। অপৰপ পক্ষী এক হৈরি ভাতৃগণে॥ गटनाइत खकरत अभूर्व गठेन। সুচিত্র বিচিত্র তার অঙ্গের শোভন। ধরিবারে ইচ্ছা ভারে করিনে রাজন। ধীরে ধীরে:যান পরে তাহার সদন। দেখি শুক মনোছখ দিয়ে সেইক্ষণ। অত্যেথিলে পাবে ৰলি করিল গমন।।

শুনিয়ে এমন বাণী পক্ষীর বদনে। চিন্তার চিন্তিত ভূপ ভাবি মনে সনে ! ভাহাতে উদাস্বড় দেখিয়ে রাজনে! পর্যার উদ্দেশে আর্থি ভাই সাত জনে ॥ পরে ভারা সঙ্গী ছাড়া হয়ে কোথা গেল আখার ক্রয়ে মালি বির্ক্র শেল !! নে শোক হইল দূর তোমার মিলনে। **अफरन रम स्थम खिटा विर्व्य विर्**त्न ॥ থখন এনেছি আমি তাহার সন্ধানে। যথায় উদ্দেশ পাৰ যাব সেই স্থানে॥ ইহাতে যদাপি হয় পতন শরীর। তবু না ভাবিব কফ এই যুক্তি ছির।। যদি কিছা জান প্রিয়ে তালার সন্ধান। কহ দেখি বিধুমুখি মম বিদ্যমান।। এত শুনি শিহরিয়ে কর্ণে দিয়ে হাত ৷ वर्टन अकि निमाङ्ग वर्क आगनाथ।। জানি সে পকীর কথা বড়ই তুষ্কর। নহেতে। তোমার সাধ্য পথ ভয়কর।। িহিঙ্গলাটে শুভাঙ্গদ নামে নৃপমণি। মনোরমা কনা। ভার নাম স্থর্জিণী॥

সৌদামিনী িনি তার ৰূপের অ্থান ' শুনি ৰূপ সুৱাসুৱে হয় হতজান। শুনেছি চুষ্কর তার বিনাহের পণ। वृक्षित्व अभिक धाद्य कवित्व वद्गे । শুনি যত নৃপস্কত হয়ে অভিলাষী। গিয়ে না পাইয়ে তারে হুগুছে সন্যাসী " তার কাছে আছে সেই শুক মনোহর ! কেমনে পাইতে ভারে বল গুণাকর। যদি কোন মতে তথা দেখা পাও তার . না হইবে কার্য্য সিদ্ধি পরিশ্রম সার 🛭 হেন কাজে কেন তথা যাবে ওছে প্রাণ। আমার ক্রদয়ে মারি বিচ্ছেদের বাণ ॥ **শুনি নৃপত্নত কয় যাব তথাকা**রে। ভাগো বাহা আছে তাহা কে খণ্ডিতে পারে। তুমিতে: অবলা বালা না জান কারণ্। নিরাশ্রমে আশ্রম আপনি নারায়ণ।। অভএব প্রিয়ে মোরে কর হে বিদার। দিক বলে শীভা চল বিলয় না সয়।।

স্কুরসেনের কাননে কালিকার সিদ্ধানত প্রাপ্তি।

তদন্তর মৃপস্তে, ভাবি মনে নানা নত, मार्थ का मिनीत धंत करता। বলে শুন প্রাণপ্রিরে, মনেতে প্রফুল হয়ে-क्य (चारत विषाय भारति।) স্বতা ব্যাদারে পরে, আদিব ভোমার পুরে, চিন্তা কিছু না করিছ সলে। जूमि यपि इंख वास, ना शृ तदव सनदास, যদি মিলে সে ভোমার প্রাণে 🖁 এত শুনি রসবতী, হয়ে অভি মুনেম্ডি, নয়নে বহিছে বারি ধারা। ' বলে শুন প্রাণকান্ত, যদি হে যাবে একান্ত, निजास इहेव आर् माता !! কেমনে জীবন ধরি, তোমারে বিদায় করি, যদি স্থা ত্যজিয়ে যাইবে। मानीटक दिश ऋत्वन, मा कतिव मिवातन,

তাহে তৰ অগুভ হইবে॥

এতেক বিলাপ পরে, নিদায় করি নাগরে, ার্ট কার্ম কে। তর জীবন। দুপস্তুত তদন্তরে, এবোধিয়ে প্রেয়দীবে, অস্থাৰটে কবিল প্ৰমন !! বিজ প্রয়োজন আশে, এনি নানা দেদে দেখে. অব্ৰেষ্টে প্ৰেশে কান্ন চেরে রুফ আগণন, ফল জুলে সুশোভন, বসি তথা ভাতে পিকগণ।। তৰে জ্ঞানে যুৰৱাজ, নিৰিছ অৱণ্য মাজ, প্রবেশিয়ে পার্গিল ভাষিতে। ভাহে পশার্থা দা, করে ভয়ন্তর রব, মহাভয়ে ন। পারে চলিতে।। ভাবিমে চিন্ডিয়ে পরে, দৃটি করি কিছু দুরে, নেখে এক ভাক্ষা ব্যাপার। পুরি এক স্থনিয়াত, চতুর্দ্দিগে স্থনোভিত, বর্ণিয়ে কি শোভা কর ভার।। ভথা গিয়ে উন্তর্জন, পুরি মধ্যে প্রবেশিয়ে, দেহেখ তিলোচনা শ্বাসনা। 🖊 पु ७मानी उग्रक्षती, व्यानशांत दिशस्त्री,

' यनवाशा गहामा दपना li

ভক্তি ভাবে তদস্তরে, সোড় করি ছটি করে,
প্রথমিল দেবীর চরবে।
হরিষেতে পূজা করে, স্তব আর্ডিল পরে
মন আশা প্রথম করেছে।

मियात खव।

নমতে জগতনাতা কালি কদয়িনি! क्षेत्रक कबून भाग सूटन वंकित्। एक् व्यंत्रमधी कृति भि भी मिनिकि। धनारना वांशासा मिला कानस्किनि ॥ ননত্তে ভূদার হত্তি ত্রিপ্রথারিণি। স্ক্ৰিট শক্তি অ। আ ভ্ৰন ব্যাপিনি । र्डी कर्जी मुक्ति मर्जि। कुलकु डॉनिन। মনল বিধাতী জগদোতী নিস্তারিণি।। प्याप्ता भाष्या महादिएमा ভाउनत जनि। জর যুক্ত কর ভার। ঈশান গৃহিণি। তব তত্ত্বভানি যানে ভব নিস্তায়িশি। নির্গুণেরে কর রূপ। মহেশমোহিনি।। আমি মা ভোমার দাস কিছু নাহি জানি। তপ ৰূপ তক্ৰ মন্ত্ৰ তুমি গো ঈশানি।।

এমপে করিয়ে স্তৃতি লোটায় ধরণী। रम्भन (मधि जुन्हे। জগত জননী 🗓 ভক্ত ব্ৰদ্ৰা মাতা তাপিত তার্ণী। কিবা ভক্তাধীনা দেবী ভক্ত পালিনী !; ভব জায়া ভক্ত প্রতি হয়ে ব্রুপারান। নৃপত্ততে সিদ্ধ নত্ত করিলেন দান।। বলিলেন এই মন্ত্র করিয়ে পঠন 🛪 ৰথ: ইচ্ছা যাবে কেছ না পাবে দৰ্শন 🛭 আর তব বাঞ্জিত যা আছে প্রয়োজন। মুখ বরে সিদ্ধাতির হইবে মুন্দ 🔢 এমত শুনিয়ে ভূষ্ট নরেশ নক্তন। এক মনে প্রণমিল দেবীর চরণ।। স্টি স্থিতি প্রলয়কারিণী তুমি শিবে। নিজ গুণে দীন দিজে,বাঞা পূরাইবে !!

কুমারের হিঙ্গলাট নগরে উপনী্ত।

নৃপস্থত তদন্তর, তথা হতে শীখ্র তর, বহিতু ত হইয়ে তথন।

महानत्म यात्र हलि, इत्तर व्यक्ति कुलुक्की नाना ऋान क्रिया अभग ॥ ·ছেন মতে দে জানন, ছাড়ি নুগতি নৰান, চভুম্পাশ্ব দেখে নেহারিয়ে। কত দুরে দুট হয়, তপন কিরণ প্রায়, मिश्रि ए। यु हिन्स भाई ए। राटल राटक करत माना, महन महन विस्टिहनः जेन्द्र भवन एवं १८५। কিষা হেন মনে লয়, হবে কোন দেবালয়. বুঝা যায় জেগতির প্রভাবে ॥ निक्छेड् इत्त शत्र, स्टब जशूद मर्शत, বিচিত্র নিন্মিত রাজ ধাম। হেরি বিনোহিত চিতে, প্রবেশিয়ে স্বরাহ্মিতে, হেরে শোভা অভি অনুপান।। ঞ্চাট্রেতে চারি ভিত. সে নগর প্লুবেটিড, চারি দার তাহাতে শোভন। পুজ্পোদ্যান ত্রুগণ, স্থানে স্তানে স্থানে **मिथि इस मन छेडा हेन** वा মল্লিকা মালভী জাতি, দেখিতে সুক্তর অভি.

চম্পক গোলাপ শোভা পায়।

वानम-विलाम।

তমাল হিন্তাল ডাল, আয় ভাম সুরবাল, उट्ट दिन भिक्षी पान शाहा। কৈছু দূরে মরেবির, দেখে স্বভি মনোহন, কাঞ্চলে সোপান হল ভার। নানা জালি পু পাও য়া, দেখে মাতি শোভা গায়. कुत्रम् संहित २४ रात्रः ।। এম্ন আক্রমি হেবে, মহানাদ করে পরে, ভার মধ্যে কার্যের জবেশা। मृष्ठि मगत मान, जानिदारव अपधाम, প্রজাগতে ক্রিস্টেমের ন ওনি প্রভাগন কয়, শুন ওচ্ছে মহাশর, কহি শুন পরি গ্রহিন। . विक्रमा है : स्था नगर, नजाजन गर्माथ, প্রভাবেপতে শহান স্মান !! সবে এক ফন্যা হার, কপ অভি চমংকার, র্ছি এক রতি তার কাছে। সে কন্যা স্বৰূপ আর, ৰূপ কি আছুয়ে কার, ত্রিলগত মধ্যে যুক্ত আছে 🛚 এসব বিকাভ শুনি, আনন্দিত গুণম্পি, चतुरम भारेम कूमज्जी।

ত্বা করি মুবরাজ, চলিল নগর নাজ, অশ্ব রাখি অতি ধিরি দিরি। দেখিছে নগর শোভা, দেবতার মনোলোভা,

शृश्यात काथटन विकर

मदशास्त्र हामनी हक, कति हाइ सक सक,

প্রস্তার প্রবালে স্থাটিত ৷ বালাখানা পরে কড, নহবত শত শত.

মরি কিবা ২তেছে আওয়াজ। নূপতি নগর মাজে, সেয়াগণ নানা সাজে,

দয়ে সন্দে করিছে কাওয়াজ।। এমতে বাজিছে দানা, মূনস পিনাক বীণা-

নওস্থার বাজে সপ্তসর।

কে বর্ণিতে পারে কভ, বাজে বাদ্য কভ মত, আহামার কিবা মনোহরা।।

দো. য়ে নগর শোভা, মণিকাঞ্চনের প্রভা,

• প্রশংসা করিল-বছতর ।

সম্মুখে দেখিল কিবা, সরোবর মনোলোভা, সোগানেতে বঁখা মনোছ্য় ॥

गितिशास शुष्त्रों । । , दिनियास स्ट्रांस्ट्रस्, शंका रहाँ मनाया श्रवता ।

শ্বেত রক্ত নীল পীত, কত পুষ্প প্রক্ষাটত, দ্রাণ প্রাণ্ডে সাদনে।। স্থাকুল হইয়ে প্রাণে, ব্যিলেন সেই স্থানে, মনোমধ্যে এইংগ ভাবিত। ভানু অস্তাচলে বায়, দামিনী আগত প্রায়, বানা হেতু বিশেষ চিস্তিত।। হেন কালে শুন বাণী, এল এক গোয়ালিনী-নাম তার কেতকা ফুলরী। णदम्भंक वराम शंख, एवं के हि नाम। यक, शमा भूथे इशाह जहती ।। ধেরি কুমারের ৰূপ, বলে এ কি অপৰূপ, धमन न। एहित दक्त परन । যদি করে বালে বংগা, তবে পূবে মন আশা, महानत्म लएश गारे वारम।। এ**ড বলি হেদে হেনে, জিজ্ঞানে কুমারে** এখে. কেবা ভূমি কোথা ভাগমন। আছ কোথা বাসা করি, বল মোরে সত্য করি বিস্তারিত তব দ্বিবরণ।। এত শুনি নৃপত্নত, মনে হয়ে পুলকিত, ं याल अम विवस् करे।

দেশ পর্যাটন ভরে, আইলাম এনগরে,
তত্ত্ব করি বাসা পাই কই।।
শুনি গোপী পুন কয়, শুন শুন মহাশয়,
আমি অভি তৃংধী গোয়ালিনী।
তথ্য বেচি রাজবাদে, সবে মোরে ভালব বে

নিজ বাসে থাকি একাকিনী।।
ঘূণা যদি নাহি হয়, এস তবে সমালয়,
বাসা দিয়ে রাখিব ফতমে।
বথন যা চাবে তুমি, মিলাইয়ে দিব আমি,

সাধ্য মম অসাধ্য সাধনে। রায় ভাবে ভাল হল, কালী মোরে মিলাইল, ইহা হতে পাইব উদ্দেশ।

স্থালে শুনিতে পাব, ভূপের তদন্ত সব, বিশেষ পক্ষীর সবিশেষ। এই যুক্তি করি সার, কচে নরেশ কুমার, তুমি মম মার সম মানী।

দ্বিজ বলে সত্য বাণী, যাহ সঙ্গে গুণমণি, ...
মিলে গেল মাসী কি হিতাশী।

কেতকীর নিবা**দে কুমারে**র গম্ন ।

তনশ্বর দুর্গা বলি চলিল ত্বরিত ! 🐪 পেয়ালিনা বাদে আদি বল উপনীত ঃ वाहित्य जेखर १० (क स्की एक्स्ती । कुमारत हाथिन नाम चिच यञ्च कति 🖯 পানি দিল ধরে ধরে নানা উপহার। ङो**ङ**गारम **ए**हे। लग ता नात नुगात 1 প্রভাত কালেতে উঠি স্মরি ভগবান। প্রাতঃ রুভা যে কিছু করিল সমাধান ১ মধ্যকৈতে লান পূজা করি নিয়মিত : রন্ধন ভোজন আদি করিল স্বরিভ। উত্তম শ্রায়ে পরে করিয়ে শয়ন। । गत्न भर्त हिन्द्र। करत् निज প্রয়োজন।। কি মতে পাইৰ আমি সেই পক্ষিৰৱে। নানা ভাবে ভাবি ভা**ব অমুত্র করে**॥ মাসী বলি কেওকারে ডাকিল তখন। আজ্ঞ মাত্র এল গোপী কুমার সদম॥

द्वारा हामि रतन मामि समह वहन। শুলিবারে ইচ্ছা এই দেশ বিবরণ চ রাজার চরিত্র কিবা কছ না মানারে: কি মত প্রভাব তাঁৰ ইচ্ছা শুনিবারে॥ चना। পুত্র কয় জন কিবা নাম চাঁর। বিভারিরে কহুলে সকল সমচেরে। লেভকী হাসিয়ে বলে শুন হে স্কুজন। বড়ই এত:প ৰড় পণ্ডিও রাজন !৷ পুতাধীন নরপতি কন্যা এক জন। অ্পর্প রূপ তার অতি ফুলকণ।। প্রধানশ ব্য হেন বয়ংক্রম তার। বিদের কারণ রাজা ভাবে অনিবার।। কল দেশ হতে এল রাজার নদন। कृष्ट ख्वारन ए। भवारत ना देवन दहन।। কি জানি কি মত লার বুকি:ত না পারি। নাহিক কপালে বিয়ে অমূভ্ৰ করি॥ রসিকা রমণী বড় এই তার পণ । 🐪 👵 যে হবে রশিক ভারে করিবে বরণ। ুতুমি ৰূপবান বট শাল্কেতে নিপুণ। रेश विष भात वृक्षि करत उव श्रम ॥

যদি বল বলি গিয়ে রাজার সদন।
কুমার বলিল নাসী কিবা প্রয়োজন।
না জানি তাহার গুণ কি মত হইবে।
বুঝিতে পারিলে করি পরিশ্রম তবে।
সাড়া দিয়ে সাচা যেন পার গৃহত্তর।
পারি কি না পারি আগে পাই তার উর॥
এতাশুনি কেতকী তাহতে দিল সায়।
দিক রূপ। বলে দিক সুগরেম গায়।

কুন)রের রাজ ভবনে কেতকীর সঙ্গে গমন।

ভাবে রায় ভদন্তরে, কেমনে পাইব ভারে,
মনে মনে করে বিবেচনা।
হয় প্রাণেতুত আকুল, নাহি পায় কোন কুল,
বিদি নানা করয়ে ভাবনা॥
না হেলে মদন বাণে, দগ্ধ করে মম প্রাণে,
কি করিব ইহার উপায়।
বুঝি বিধি নিজ করে, গঠিল সে প্রেয়সীরে,
ডেদিবারে আমার হদর॥

कर्ण कर्य हाम काम, धना कि घटिन नाम. আসিয়াছি শুক পর্ফা তরে। নাহি পাই ভার টের, হইল বিশ্ম কের মনোজঃথ কৃতিব ক হোৱে !! रम क्रुश नहीं পाधात, रक्षनत्म करेंग भात, क्ति इदब मा रतांथ ता डेशास । পাব কি না পাব তারে, ইচ্ছা হয়, দেখিবারে, ভাবে মনে নরেশ ওলয়।। ट्र कारन आसालियों मञ्जूत काने घटन धरी, ত্বর্ধ দিতে ভূগের ভবনে। তা দেখি নাগর রায়, চিন্তায় চিন্তিত কার, বলে যাৰ কেমন বিধানে।। বিধির বিধির বলে, যাইতে স্কুলরী প্রাণ্ডে, সিষ্ঠ মত্র হইল স্বর্গ। गर्खेत প্रভाব जना, দৈখিতে ना পाग्र व्यना, পুলকিত কুমায় তথন !! চলিল কেতকী সঙ্গে, আপনার মনোরকে,

सत्त जावि घटक्नात्माक्ती। मीन विकारिक मात्रह्याह त्मक म्लाकतः अस्था लाउन नद्यमः मक्ति।।

कुमादित मृश कना। पर्णन ।

তলিল পুসার ভবে কেডকীর সঙ্গে। নং পার দেখিতে কেই মন্তের তরজে !! উপনীত রাজ বানে কেতকী স্থন্দরী 🗀 কুমার সভোষ বড় দেখি রাজপুরী।। ष्ट्रांश्वर ७४म (४) छित्र स्माह्य । দুটি মাত রূপস্ত বিমে।হিত সন।। জুন্ধ দিতে কেতকী গেলেন রাণী কাছে : মনে। রঙ্গে চলে রার তার পাছে পাছে । এই মতে স্বাক্ত্র ভবন দেখিল। दाख मिननोत পार्य (मरपट इनिन ।। রব্র পালক্ষেতে তথা মন্মথমোহিনী। সখীগণ বিনায়ে দিতেছে শিরে বেণী।। ্ একেত ৰূপনী তাহে বয়ন যোড়শী।' ৰূপছটা দেখি মান হয় তায় শশী।। , অধিক কি কব নগ ভুবনমোহিনী। मिश जनरमञ्ज्ञारण नुकास मामिनी।। কপদীর ছেন কপ কুমার ছেরিয়ে। ত্রক করি নানা সত বা পার ভাবিয়ে।

ভাৰতে: কৃমার মনে ভাবিরে উপায়: ছবিত ভড়িত প্রায় আইল বাসায়।। পরেতে কেওক। রঙ্গে নানা বক্ষা করি। উপনীত ধনী পত্ৰ গমনেতে করী।। । लंदक विद्रश्चिति ए। दह दमक छेन्छ । 'মরার অনিল আগর বহিছে তথায়।। भिकाश कृद्यात कति एए शानः শুনি মেই ধনি উড়ে ধনীর পরাণ। तिवस खानास बास मिलि जिन छानी। कुश सत्य जारव वर्षि मृद्भात सन्तिमी ॥ ইতি মধ্যে উত্তরিল কেতকী আসিয়ে। কি কর নাভিনি ব'ল সম্ভাষিল গিয়ে॥ আয় বলি স্থরসিনী সম্ভাষিত্র তারে। বলে তব স্নেহলেশ মাহি মাতিনীরে ॥ শাপন আপন করি ভারি যার ভরে। সে জন আপন করি না জানে অন্তরে॥ প্রেমাসজিযুক্ত চিত্ত হয় জেই জনা 🕆 ष्यमा छूट्य छुदी स्मर्टे विश्वाप कृतम ॥ এত:ত্তনি হাসি হাসি কহে গোয়ালিমী। ক্তপা করি শুন আরো এদানীর বাণী।।

তোসার পালিত দেহ করিয়ে ধারণ i ত্য উপকার না করিব কি কারণ।। নিজা আলি তব পাশে যাভায়াত কৰি! কোন কথা মম প্রতি না কহ স্তন্ত্র !! যে তব সাক্ষণ প্রণ মবেশ মন্দিনি । প্রেমের মহিমা তুমি জানিবে কি ইন।। কেন আৰু ঠাট ছলা কৰু সম পাশে। 9% तह नीघ जाबि गारे निज वारम ii अर्हे मए उमा जारम कथा पुरे करन। পরে গোপী বাহডিল আপন ভবনে।। আদা অন্ধ অংসিয়ে কহিল গুণাকরে। শুনি তুফী বররায় সাপন হান্তরে।।। কেতকীর কথা হায় করিয়ে আব্য অন্তরে হইল আশা আলি উদ্দীপন ॥ विक्**न** हर्देश क्षारी वाछ दन चाछि। নলে কিৰূপেতে পাৰ সেই রুমবতী॥ যদি কোন মতে গিটার আইলাম হেরে। উপার না পাই কিন্তু কপালের ফেরে।। বিধাতা বিগুণ বারে ঘটে তার হেন 🗁 মিছে মিছি ভার জনো ভাবি আমি কৈন।। বিজ বলে রশরাল কি ভাব ছতাশ। নিশি যোগে যা২ পূর্ণ হবে তব আনা।।

क्रगादतत्र निनादगादगादगाम्बदना-दिल्लागाः।

তদন্তর নৃপস্তত, মনে হয়ে হর্যুত, याहेरा छुनाती बद्राबाद । কেনন সনহো থাৰ, এই মড অলুভক करत तात पालन अग्रत ॥ **पिवाडोट्ध लाटन एया, ब्हेटर सकल बूथा,** कार्य। भिष्ण मा स्टान् कथन । লৈপিতিক ছলনা করি নিশাবোগে ভার পুরি, याव दश्न दिवल निकाभागा। এল ভাবি কেভকারে, ডালিয়ে কুমার ধীরে, **छ** दूत हा दूती-कति रूग। देनवतन विना वन, नाहि दानि अना वन, শুন এই করেছি নির্ণয়।। রাত্রি ল্লোগে গৃংছ বসি, রব আমি সারা নিশি, করিব লিখর 'কারাধন।ু

নকান করিলে আর, নাহি পাবে সমাচার भिक्ष मा १६८० ८८ सामन ॥ শুনিয়ে কেতকী কয়, কি কাজ লাগায় হায়, মোর করি ভোষাকে **সন্থান।** থাতে হয় সিদ্ধ কাজ, ভাষা কর ধ্বরাজ, **ज्ञि भ**र्त भारत ज्ञानवान गरिन এত বলি পূৰ্জ্মত, অনি আং**য়াজন যত**. थर्स थात मिल कुमारहरत । বুদান ভোজন বাঘ, সমুদার করি সার, भारत कृतिए भरा। भरत्। কলাৰে আশাৰ কত, তনে মান চিত্তাবিত, আনাপণ রহিল নির্থি। **्रम** कोटल निवा शह, तलनी रूल **आर्ग**ड, নেখি অভিশান হল সুখী !! তুখে শ্ব্যা পরিহরি, উঠে রায় ত্র্রা করি, भक्षापि कविल्यभाषांन। তদন্তর নৃপসূত, ইইলেন সুসজ্জিত, ব।ইতে স্থক্তরা বিদ্যমান।। মন্ত্র পাঁড় চলে রায়, কেছ না দেখিতে পাঃ

উপনীত কন্যার জারারে ৷

हात्र नार्ने एउ कन, नाहि लाव नद्रगन.

भाषात्म अधिन उथाकारन ॥

গ্রহর বামিনী শবে, নিজাগত হল দেবে,

बीदा बीदा हत्न प्रमाय ।

किंशिक् हिन्दिस महम, धार्वनिस स्य नमस्म,

দেখে কত গালহ তথায় ৷৷

अनुष्यार्थ चार्र्ड खरत, तज्ञाः भागरकाशस्य,

সংগীরণ হয়ে শোভাস্থিত:।

তার মধ্যে সুশোভিত, কাধ্যনেতে সমির্লিড,

- স্থদীপ এক্তরে প্রবেকিতা।

म शारनाम भटत हती, विका याद स्वनती,

विन कृत्य हत्यत केत्र।

মাণিকের অভরণ, অফে বাছে স্থােভন,

मिदा बाह्य इक्षेत्र विषया॥

সানে মনে নাম। মত, তক্করি ন্প**হুত,**

किছू श्रित कतिए गातिल।

ক্ষণে মনে করে রায়, স্থবর্ণ লতার প্রায়,

न हर् किश इस्टिव छत्रन ॥

বুঝি তার অভিনায়, মৃতু হাসি দিল কর,

द्रमञ्जङ के रम मुन्दती।

কনার সমান কান্তি, অন্য ৰূপ তব জারি; শুন ৰূপ বা কহিতে পারি।।

ছিজ কর্তৃক ৰূপ বর্ণন।

কেন রসময় কুমি ভাবিত্ব অন্তরে । 🔻 ऋर्गलणः ख्याम पात मुशमन्त्रिमेरात ॥ চন্দ্ৰ কি হুইবে ও ক্পের প্রতিরূপ। কে।টি চন্দ্র ইইলে न। হইরে স্বরূপ ।। একপের সম কপ না দেখি নয়ন। छेशया भिराद त्याका हि आह्य धूर्यस्य।। দেখ নাল গট্ডাস্ত্রে অঞ্জলোভা করে। वािशिल भट्टम हास्य (यम जनधात ।। চাঁচর চিকুরে ও যে দেখ পূর্ভে বেণী**।**। গৰুচের ভয়ে ওতো লুকাইয়ে কণী !! ভালের উপরে দেখ সিন্দুরের শোভা না হয় তুলনা যাহে অরুণের আভা।। মূগমদ বিন্দু ছথি লম্বিত হয়েছে। অরুণ গ্রাসিতে যেন রাছতে চলেছে।।

🖈 হোর নিম্নেটে কিবা চন্দ নের রেখা : লিভায়ার চন্দু, আধি বেল দিল দেখা !৷ ভূগর ভঞ্জিম। কিবা পরশিন্দে শ্রুভি। চড়াইয়ে গুণ যেন জাছে রতিপতি।। শুক চঞ্চু গিনি নাসা বড়ই স্কার : ্রজনে কড়িত ভাকে জুলিছে বেধর দ শোভিত মুকুতা ভাহে দীধি বারে মণি। থকভের মুখে যেন কল্পদান ক্ৰী।। কি দিব ভুলনা ভায়ে মুখেন উপনা ! জগতে না পাই কিছ্ কলি ভার <mark>দীমা</mark>।। অনঞ্জাফ্ল ইয় যথন দেখিয়ে! ভাষ্য়ে জুলনা যোগ্য না পাই ভারিয়ে।। ভারণ জিনিয়ে কিবা অধর স্থন্দর। না হইবৈ পকু বিদ্ব তাহার সোনর ॥ তার্যার মধ্যেতে কিবা দশন শোভিত। कुक कुद्धरमण्ड (यम अक्रम हे पिट ॥ নেত্ৰদন্ত নালামু জ আছে প্ৰস্ফুটিত। তারক ভ্রমর কিবা তাহাতে শোভিত।। নাচিছে খঞ্জন কিবা কমল উপয়ে। কিয়া শশি রশ্মি:পান করুয়ে চ**ট**কারে।।

ঞতি মূলে রতন কুওল শোভা ধরে किरिटर भेत्रमू भेभी यालयल कटड ।। जाटक रामि अर्क मुश रत्रन अक्षरत । शूर्व एक्ट एाटक राग धन स्मा मटन ।। কিবা সে উন্নত কুচ অভি স্থগোভিভ স্থুমের শিখ্যর খেন মতেশ উদিত ক র্ভন জড়িত মণি বংফা স্থাপোভন। উদয় গিরিতে খেন উদিত ভগন 🛚 নাভি কুপ হইতে উদিত লোমাবলি : স্থা আশে ধায় যেন পিপীলিকা চলি। মাণিক মৃণাল বিনি ভুজ শেভি করে। স্তল প্রদা প্রাক্ষা টিত যেন স্থল পরে। ফতেক কহিব আর শুন রসরাস। বিলয়ে কি ফল সিদ্ধ কর নিজ কাজ ব

কুমারের স্থনরীকে দর্শন ও চিহ্ন রাখা।

তবে নৃপস্কত, হয়ে হয[়] যুত, : উপনীত সে নদনে। দৈখি ৰূপ ভাব, ভাবে চমৎকার, यदेशमा इहेट्य आदन !! दटन विवि इस, आमादत मम्ब दामना शृत्राश उत्व । नंज्या कीयन, कि कारक शावन, यञ्जभ महिद्य उद्य । मदस्य नगरन, कतिदस् विजन, भरबार जाविएश जाता। **हिञ्च मा वाधिरा, याहेव कितिरा,** এ নয় উচিত সোৱা ধ এই মত স্থিন, করিয়ে স্থানি, বক্ত বদলিয়ে লয়। **ाशुटल**त ताल, मिट्स **डाट्ड** माल, বাহড়িয়ে চলে রায়। রাখি প্রাণ মন, করিয়ে গমন. প্রবেশে কেতকী পুরে। সংকৌপনে রায়, আপন শ্রায়, শয়ন করিব পরেশ किছू क्रवास्टरत, मिना श्रांत मुदेत, উঠি পরে রসময়।

প্রাতঃ ফ্লুডা যত, সারিয়ে ভারত, ডাকিয়ে গোপীরে কয়। শুন মাদি ভূমি, যাহ শীভ্রগামী, নুপবালা বরাবর । कि कदब दन जन, आनि विवत्प, অগুসি বল শীঘ্র ভর !। धशास्त्र कुमती. शाखाश्वान कति. আপন অঙ্গেতে চায়। ज्दक्षत राजन, कृति निर्तीकृत, হুত শ ভাবয়ে ভায়।। वत्त क इलिएस, वान वृह्तिएस, কেমনে লইয়ে যায় : পুন ধনী হেরে, বসন উপরে, তাষুলের দাগ তার॥ কে করিল হেন, না বুঝি কারণ, 🤡 যে হক চোরের কন্ম 🎶 🕔 यमि क्षांत्र विन, रकन यादव छलि, ना दुक्ति हेशद्र मण्डाः रमय कि मानव, इस्म कि आनव, ্জসম্ভব কাজ্যার 🐺

मुग़ात्त थरती, व्याट्ट शृति धिति, কেমনে পাইল দার ৷! চোর ভিন্ন মন, কে করে হরণ, করিয়ে প্রাণে বিকল। গেল কোথাকারে, নহে ধরি ভারে, উচিত দিতাম কল li চিলাম নিদ্রায়, কি করিব হায়, কি কাল যুমের ঘোর। कृपि कांत्राशादत, विक देकत्य खादत्र. তবে দে জংনিত চোর ।। কিবা ভার নাম, কোথাকারে ধাম, কে জানে তাহার মূল। অশেষ প্রকারে, ভাবি ধনী পরে, প্রাণেতে হয় আকুল।। পরে ছলে धनी, मानी বলি ধুনি, করিল কোকিল স্বরে। অমনি সবায়, আসিয়ে তথায়, দাঁড়াইল যোড়করে॥ चूर्निष्ठ (न। हटन, कटह नर्स छटन, নাহিক তোদের ভর।

দকলে থাকিতে, আমার পুরিতে, কেবা আসে কেবা যায়! বুঝিন্থ ডোদেরি, আছয়ে চাতুরী, নহে ভান্য কেবা পারে। না গারে দেবতা, কাহার যোগাত:. আসি মম বাদ হরে।। यमाशि षाश्रम, त्राशिष्ट कीवन. অন্নেৰণ কর তার: নহে বিপরীত, হুইবে উচিত, প্রাণ বাঁচা হবে ভার।। শুনি এই ভাষ, সবার তরাস, कंत्रधार्ड भरव करा। ভবাজিত জনে, এমত বচনে, দোষা না উচিত হয়।। মোরা দাসী তব, হেন অসম্ভব, কে করিল জানে কেবা। বিচারে আপনি, দেখ ঠাকুরাণি, উচিত হইবে ষেবা ॥ বুরিনে নির্দোব, তাজি নিজ রোষ, চিন্তা কর সবে মেলি।

হেন কালে ভথা, গোপী উপনীতা,
কি কর নাতিনি বলি।
দিক্ত বলে ভাল, হইল সকল,
যুক্তি লহু গোপী স্থানে।
জানে নানা ছল, বুদ্ধি সে প্রবল,
নানা মত যুক্তি জানে।

গোপী প্রতি রাজকন্যার মন্ত্রণা জিজ্ঞাসা।

স্থানরী বিশুর করি, গোপিকার করে ধরি,
প্রকাশিছে মন অভিলাব।
নিশি বিবরণ যত করাইছে অবগত,
মনোমধ্যে হইরে উদাস!
আদি কেবা মম পুরে, বাস পরিণর করে,
তামূলের দাগ দিয়ে তায়।
মনঃ প্রাণ করি চুরি, গেল সে করি চাতুরী,
তাহাতে দহিছে মম কায়।।
কেমনে এমন বাসে, আইল বাকি সাহসে,

পরশিরে মম কায়, ঘটাইল হেন দায়, यन दङ् कदत्र छेठा हैन।। কি ভূণে সে ভূণমণি, বিকল করিল প্রাণা, নে জনে কেমনে পাওয়া যায়। ভার দর্শন বিনে, স্থির নাহি হয় প্রাণে, অতএৰ কহ দে উপায় !! তুমি বিনা এই কর্মা. কে বুঝিতে পারে মর্মা स्मादत साहि कत (ह दशमा। গুনা আছে তব যশ, জান ভাল প্রেমরুস, व्यक्षीनीदन्न ना (में उन्ने ।। শুনিয়ে এসৰ বাণী, যু ড়য়ে যুগল পাণি, বলে গোপী আমি কুদ্র প্রাণী! মোরে এত সমাদর, অকারণ কেন কর, শুন ওহে নরেশনন্দিনি।। কি ভাব ভাবনা তার, যে মত যে বাঞ্চা বার. উপায়ে উপায় হয় যত। এই যুক্তি বলি আমি, কপট নিদ্রায় তুমি, শয়নে রহিও পূর্বমত।। व्यवना मिविएंड भारत, नर्क कार्या निक हरैंव, भूर्व इत्व मन खाँख्वाय।

'মত এব রাজবালা, হইল অধিক বেলা,
আজ্ঞা হলে যাই নিজ বাস।
এত বলি গোয়ালিনী, আসি নিজ বাসে ধনী,

क्मादत कतिन निर्देशन।

শুনেরে চতুর রায়, চাতুরী করিয়ে কয়, কোন কালে না শুনি এমন।।

তদন্তর নৃপস্কৃত, দিবা কাষ্য পূর্ব্বমত, সাধিলেন গোপীর ভবনে।

হেতা গৃহে রসবতী, হয়ে অতি ম্লান মতি, ভাবে তারে পাব কতক্ষণে।।

হেন কালে দিনকরে, দিবা অবসান করে, অস্তাচলে ক্রিল গমন।

क्रोवत्म कीवन वाला, वक्क वित्रद्ध वार्क्ना, मत्नाक्रः प्रमुक्ति नम्न ॥

করি নিশি দরশন, দোঁহার সম্ভোষ মন,

निक निक यूक्ति खित करत।

সময় হইল যবে, কপট নিদ্রায় তবে,
রহে ধনী নিজ শ্যা পরে।।

অমন্তর যুবরাজ, সাধিতে আপন কাজ, চলিলেন স্থলারীর স্থানে। মন্ত্র তেকে কোন জন, নাহি পার দরশন,
উপনীত ধনী বিদামানে।।
দেখি পূর্ব্বমত গত, আছে গবে নিজান্তিত,
কি করিব কুমার ভাবিছে।
করে গেছি কালি যাহা, বিদিত হয়েছে তাই
করি জানিতে পারে পাছে।।
ভিজ বলে রুগরাজ, সাবধানে সাধ কাজ,
কপট নিদ্রায় আছে ধনা।
ভানিতে পারিলে যত, মন্ত্রণা হইবে হত,
বিবেচনা কর গুণমণি।।

কুমারের পুনর্বার ছলনা।
এই মত যুক্তি করি কুমার তংকপে।
কি ছলে ছলিব আজি ভাবে মনে মনে।
পরে যুক্তি স্থির করি মজের বলেতে।
গৃহে প্রবেশিয়ে বসে তার নিকটেতে।
দেখিছে স্বর্থ কত তাযুল আধার।
রজতে নির্মিত কত শত আছে আর॥
নিঃশক্তে তাহার আছাদন খশাইল।
রজত আধার স্বর্থতে মিশাইল।

ভদন্তর তথা হতে করিয়ে গমন। लाभी बारम উखिंदन नरदमनमन । शृद्धमञ्ज्ञाशस्त्र भग्नत्म थाकिएम । দিবা নিশি করে চিন্তা প্রেয়দী লাগিয়ে। তিথানে ৰূপনী দিবা নিশি আসা আশে। না দেখি নিরাশা ভাবে মনের হতাশে । **দেখে** তারা অাথিতারা হয়ে গে**ল স্থি**র। সুখহরা সুখতারা হইল বাহির। অধিকন্ত নিজার কাতর জাগরণে। মুখ শুকাইল তাহে না হেরি সে জনে 🛭 श्रजाट উঠিয়ে भनी इरेल प्रशन। অদর্শন হুভাশন তাহাতে প্রবল ! ত্রবিল দেবতা মায়া নর কভু নয়। वाषिक इहेरत्र खार्य नशीनरम कत्र। খলো দখি প্রেমানলৈ আমার হৃদয়। দত্ন হতেছে বল কি করি উপায়। विद्रह् अभन जाला ना जानि कथन 🕬 🕆 ना रहरत महनवार्य भन्नीत महन 🛭 श्रमि मधीनन मर्व करह मकस्रदेव व बक्त छेठना इरल किरमंत्र कांत्ररा 🎚

স্থির হও যে হউক সে হবে বিদিত। আজি কালি পরে তারে পাইবে নিশ্চিত 🛚 এমত প্রবোধ বাক্য বুঝায় ভাহারে। কুমারের কথা কিছু গুন তার পরে ৮ প্রভাতে উঠিয়ে পূর্ব্বমত কার্যা যত। ক্রমে ক্রমে সে সকল সারিল ভাবত। কেতকী আপন কার্য্য সারি তার পরে। ত্তধের যোগান দিতে চলে রাজপুরে ! একে একে नकल उर्वन हुआ मिर्ह्स । কন্যার আগারে পরে উত্তরিল গিয়ে। पिथिता शक्ति विद कहिए नानिन। ভোমার মন্ত্রণা গোপি বিফল হইল। আর যা হয়েছে নিশি যোগের ভিতরে সে সকল বৃত্তান্ত কহিল গোপিকারে। শুনিয়ে কেতকী কয় নায়িকা সদনে। व्यवाक हरब्रोहि व व्याक्या कथा स्टान्।। শুনেছি দেখেছি বহু করি এই কাজ। ভোমার কার্যেতে বড় পাইলাম লাজ। यम कर्म नटह जात सन दम्ब । বুরিয়ে করহ যেবা লয় তব মতি।।

এত বলি ছুগ্ধ দিয়ে গোপী চলি গেল। নাযিকা শুনিয়ে মনে ভাবিতে লাগিল ! কবিবে গোপিকা ভির আছিল বিশ্বাস এক্ষুণে সে সব মম হইল নিরাশ।। অন্তির আমার সদা হয় ধর জর। নিবারণ কিদে হবে ভাবি নিরম্বর ॥ প্রমন্ত চঞ্চল চিত্ত চকোর আমার। ব্যাকুল হয়েছে বড় নাহিক নিস্তার 🛭 এরপ করিয়ে ধনী ভাবিছে অন্তরে। গোপী গিয়ে সমুদায় কহে কুমারেরে। শুনিষে পূর্বের মত চাতুরীতে রায়। অন্তরে আহ্লাদ মুখে বলে একি দায়॥ দ্রিত্র বলে ভাল রায় বিদেশ আসিয়ে। গোপনে করিছ মঙ্গা দুতী ভাঁড়াইয়ে।

রাজকন্যার খেদোক্তি।
তদন্তর শুন সব রসিক স্কন।
বে ৰূপ হইল পরে ভার বিবরণ।
নিতা নিতা রসরাজ স্থানীর পুরে।
গমন করেন কেছ জানিতে না পারে।

এक मिन नेशञ्चल हिट्छ मटन मटन। আরু কত যাতায়াত করিব সেথানে। এমত ভাবনা আরু কতকাল রবে। আমরি কেমনে কর্ম দিল হবে করে ! কি ভাব ভাবয়ে মোরে জানিব কি ভাবে 🏗 সে ভাব ভাবিয়ে রায় বিমোহিত ভাবে। তার পরে ভির করি নরেশ নক্ষম! রীতি মত কর্ম যত করে সমাপন। দিবা শেষে কেতকীরে কহিল ডাকিয়ে আ'ঙ্গি একবার আসি মগর ভ্রমিয়ে।। এভ বলি গেল চলি মন অভিলাষে। মস্তের প্রভাবে রাজনন্দিনীর পাশে।। আপনার গুণাগুণ করিতে প্রবণ ৷ . तिहरमन **७**गांकत रहेरा रागम ॥ **এখানে বিচ্ছেদানলে মরেশ তুহিতা।** দিবা নিশি আছে ধনী ধরণী পতিতা।। বার বার ধারা বহে কুরঙ্গ নয়নে। শ্যুৰে স্থপনে দলা জাগিতেছে মনে। वित्रह अनारभ कच् रहंडन त्रहिंछ। উঠি পুনর্বার আরে। হয় সচিব্রিত।।

यत्न क छात्रिज आर्ग माधिरनर योग। কি ৰূপে পাইৰ আমি তার স্বসংবাদ। যে হক সে হক তার পাষাণ হৃদ্য । अपूर्णा मतला वर्ष इहेर समिम !! পরশিয়ে মম অপ মজাইল মন। द्युकारम कि लाज वृत्ति (योवन त्रजन । এসব শুনিয়ে রায় মনেতে ভাবিল। স্থান রীর খেদে খেদ অধিক বাড়িল !! মিলন সলিল আসা উথলি অন্তরে। ত্বরিত্তড়িত্প্রায় দেখা দিল পরে।। ক্ষণ মাত্র তথা হতে চলি গেল দূরে। উত্তরিল রসরাজ কেতকীর পুরে।। এঁছীনে স্থন্দরী হেরি বলি আহামরি। অধরা হইরে পত্তে ধরার উপরি।। ক্রত আসি যত দাসী তোলে মনোছুখে। স্থবাদিত জল আনি কেই দের মুখে।। করবোড় করি কহে কহ বিবরণ। रुठाত् ष्रदेभर्ग इत्न किंद्रमत कातन ॥ कृत्वत्र कामिनी जूमि नाहि कत्र वाज। করিবে কলন্ধ অকলন্ধ ক্রবা মান্ত।।

ধৈষ্য ধর রাজবালা স্থির কর মন।
পাছে কেহ গুনে এ সকল বিবরণ।।
শুনি ধনী তা সবারে উত্তর না দিল।
মনাগুণে মনে মনে ভাবিতে লাগিষ্য।
দিজ বলে রসবতি চিন্তা কি তাহার।
যায় লাগি চিন্ত চিন্তা অবিক উহার।।

কুমারের মিলনের উপায় চিন্তা!

হেতা গোপীবাদে রায়, চিন্তায় চিন্তিত কায়
হয়ে শেবে হির করে মনে।
দেখাইতে কারিগরি, মনেতে মানস্কিরি,
করে শেবে কৌশল যতনে।
চিত্রপটে নিজ কায়, চিত্র করে রসরায়,
পরম স্থলর চমৎকার।
দেখি মনমর্থ মন, অমনি হয় মোহন,
অবিক বর্ণনা করা ভার।
বিভীরত মহোদয়, কানিনীর প্রেময়য়,

তাহাতে তমুর তরি, ভাসাইতে ইচ্ছা করি,
নিজ প্রিচয় তৎপর ।
বিনয়ে লিখিল যত, বর্ণনা কি হয় তত,
পরে যাহা লিখিব কিঞ্চিত্।
অমূত্রহে সর্বা জন, করিবেন নিরীক্ষণ,
দীন দিজে হয়ে কুপান্থিত।।

কুমারের পতা।

ठिळकारा।

প্রধাসুথি তব মুখ দেখি স্থা প্রায়।
রংগহানে প্রেয়নি লো দৃষ্টে প্রাণ যায়।
গিধিনী গঞ্জিত ক্রুতি শোভিত কুগুলে।
নিশি দিবা ভাবি দহি দুঃখ দাবানলে।
তরাও কটাক্ষ করি পুরাও বাসনা।
বড়ই ছুর্বার মন নাহি শুনে মানা।
আাশরে থাকিয়ে অতি হয়েছি আাকুল।
শোষ কর যে সকল হবে প্রতিকুল।।
আছয়ে তোমাতে প্রেম জলধি জীবন।
সিন্ধু বিন্দু দানে তবে কেন হে ক্লপুণ।।

এ আশে বঞ্চিত হলে হইব নিরাশ।
ইঙ্গিতে বুঝিয়ে মোর পূরহ প্রয়ান।।
দেহ দহে প্রেমানলে বিষম প্রমাদ।
শরের সহায় তাজি করহ প্রসাদ।।
মিলায়ে পদের আদা বর্ণ সঞ্চারিবে।
ভৃষ্ণাযুক্ত চাতকে কাতর না করিবে।।

কুমারের স্থন্দরী প্রতি পত্র প্রদান ।

এমত করিয়ে লিখিয়ে রায়।
রাখিল বসনে বাঁধিয়ে ভায়।।
ভাবিছে কথন হুইবে নিশি।
দেখিব যাইয়ে প্রাণ প্রেয়সী।।
হেন কালে গেল দিবসমণি।
আগত হুইল আসি রজনী।।
নিজ কাজ যত সারিয়ে পরে।
গোপীকে ছলিয়ে গমন করে।।
মস্তের প্রভাবে চলে সম্বরি।
কহু না দেখিল রূপ মাধুরী।।

প্রহরী যতেক আছিল ঘারে। দেখিতে না পায় কেহ ভাহারে! **उ**द्वर द्रिक वज्रकारदर्भ । याद्रेरत छन्द्र भूत धारवरम्। दमिन वितरह दंशिएक धनी। বাংকুল হইয়ে পড়ে ধর্মী 🕸 নাহি হে:র ছভে বাস ভূষণ : এলাই ১ কেশ মান বদম।। क्टिছে माज़न कि जिल जैला। এক কি সহিতে পারে অবলা ॥ যে দিল আমারে এত বাতনা। कर्म डाहात छात हत्त मा॥ মানবে কভু কি পারে এমন ৷ যে হকু সামানা নয় সে জন।। ভাহার সাহদে দি ধন্যবাদ। কেমনে এমন নাথে প্রমাদ !! আর না বাঁচিব ভার বিহমে। বল কে মিলায় আনি সে জনে!! মদন আগুন উঠিল জলে। দ্বিশুণ বাডিল মল্যানিলে।।

রসবতীর পত্র পাঠান্তে স্থা প্রতি উক্তি।

রসবতী, পড়ে পাতি, হয়ে অতি, উতলা।
ছংখ ত্যাগি, সুখ ভাগী, বঁধু লাগি ব্যাকুলা।
মানা মনে, নাহি মানে, প্রেমাগুনে, বাতনা।
কিসে পাব, কারে কব, এই সব, ভাবনা।

হর্ত মতি, হয়ে অতি, দাসী প্রতি, ডাকিল।
হয়ে শাস্ত, আদা অন্ত, সে তদত্ত, কহিল।
আমি ঘারে, নাহি হেরে, শ্বর শরে বাথিত।
অবিস্থার, সমাচার, আছি তার, বিদিত।
এমগরে, বাদ করে, কার পুরে, গোপনে।
শীঘ করে, আনি তারে, বাঁচা মোরে, জীবনে।
যতক্ষণ, সেই জন, নাহি আন, নিফটে।
একি দার, হায় হায়, গ্রাণ যায়, কপটে।
শুনি হেন, বিবরণ, স্থীগণ, ধাইল।
রগো নগা, গিয়ে ভ্রা, দব কথা কহিল।
রাসরাণী, ভাবে শুনি, একি বাণী, কি কহ।
বিজ কয়, যোগা হয়, দিতে ভায়, বিবাহ।।

দাসীগণ কর্তৃক রাণী প্রতি সংবাদ প্রদান 1

তদন্তর রাজরাণী দাসীরে জিল্ঞাসে। কহ বাণী নন্দিনী এমন হল কিসে॥ শুনি দাসী যোড় করে কহিতে লাগিল। আদা অন্ত যে কিছু সকল নিবেদিল।।

তবে রাণী এত শুনি ভূপতির পালে। চুহিতার কথা যত মুদ্ধ মৃদ্ধ ভাষে।। বে ৰূপ আশ্চ্যা কথা করেছে সে জন। विखातिङ भारता करण विवेद्य ।। রাজা বলে রাণি ভূমি জান পূর্বা হত। বিভা হেতু এসৈছিল কত রাজস্তুত।। সে স্বারে তন্ত্রার না হল সম্ভি খেদে ভারা কোখা গেল ছাড়িয়ে বসতি " এখন হয়েছে তার ইচ্ছা বরিবারে। যা শুনালে হেন জনে পাব কি প্রকারে 🛭 দ্রশন টিফ হদি পাওরা বার ভাব। তবে দে করিতে কিছু পারি প্রতিকার 🛚 ষাহ রাণী শীঘ্রগতি নান্দনীর পুরে। যে কিছু থাকয়ে চিহ্ন এসে বল সোরে।। এমত শুনিয়ে রাণা চলিলেন ধেয়ে: সুরঙ্গিণী পুরি মধ্যে উত্তরিল গিয়ে॥ নারে দেখি স্থরঙ্গিনী লজ্জিত হইল। गुथ जूनि शृर्वगठ कथा ना कहिन।। ইঙ্গিতে বুঝিল রাণী ছুহিতার মন। लाभरन मामीरत वरण कह अरबाजन।।

मानी भिरंश सिर्ट कथा स्वन्न बीरत 🗪। स्विट्य स्वन्तर्भी इन श्रुनक क्रम्य ।। চিত্রপটে লেখা ছিল অন্তব ভারি। বাহির করিল শীঘ্র নরেশ কুমার !! রসময়ী পত্রী সহ আছিল মিলন। स्रम् ती लहेल छाइ। कतिए। ছেদन क्षित्र्युर्क्ति हिज्जभित्ते पिल मानी कटहा ভারা লয়ে দিল গিয়ে मুপ বরাবরে॥ দেখিয়ে মধ্যেষ সামী প্রতিমূর্ত্তি তার। মনে মনে ভাবে একি ৰূপ চমৎকার !! সামান্য মনুধ্য বলি না ভাবয়ে মনে। व्याक्तारम रन श्रेष्ठ लस्त्र मिर**ल**न ताक्ररन ।। হেরিয়ে মূরতি মহীপতি ক্ট চিত। বিশেষ ক্ষমতা জেনে হৃদে পুলকিত।। তদম্ভর পট লয়ে বসিয়ে সভায়। পাত্র মিত্র সভাগণে ডাকিল সবায় 🛊 . কহিতে লাগিল পরে পুরের রুজান্ত। হয়েছে আশ্র্যা বত তার আদা অস্ত্র।। শুনি সভাসদ্যত হইল বিস্ময়। ৰলে নাছি শুনি হেন না হবে না হয়।।

মন্ত্রীয়ের কর্মা এই নছে কদাচিত ! দৈবাধীন কমা এই হইবে নিশ্চিত।। ভূপ বলে নর বটে জেনেছি প্রকারে। পত লিখি গাখি গেছে কনাার আগারে !! এনেছে এদেশে সেই করিতে ভ্রমণ ! এই দেখ দেই প্রতিমূর্ত্তির গঠন !! এত বলি দিল কেলি সভা বিদামানে I দেখি ৰূপ অপৰূপ ভাবে সবে হয়ে।। তদন্তর নৃপ কহে শুন সর্বাজন। কর তত্ত্ব এনগরে স্বার ভবন।। যথায় পাইবে তার করিতে সন্ধান। যতনে আনিবে তারে মম বিদামান !! স্কুমারী কন্যা মম অতি স্থরঞ্চিণী। তার বিভা হেতু ভাবি দিবস রজনী॥ করি তত্ত্ব কড স্থানে স্থপাত্র কারণে । নাহি মিলে যোগ্য বর সদা চিন্তা মনে 🖰 यिन विधि এই क्रांच मिलाश मनत्न ! मत्नामार्देश मित जारत कन्या तुलू धरन ॥ এত শুনি দ্বিজ কয় নিকটে রাজার। যে যুক্তি করেছ এই উচিত ইহার ॥

দূতগণের কুমার অম্বেমণ্

তদন্তর দাসগণ, নুপাভ্ডায় সর্বজন, অন্বেধণ কবে সে নগৱে। সরার ভবনে ফিরি, সে জনে নাহিক ছেরি, মন জঃগে জু:খিত অন্তরে !! পরে এই জনরর, পরস্পর শুনি সব, প্রজাগণ আসি মিলে তথা। স্থ্ৰখাইয়ে তা সবায়, কিছু না <mark>শুনিতে</mark> পায়, ভাবে কিলে পাইব বারতা॥ এখানে কেভকী ধনী, শুনি এই সৰ ৰাণী, कुभादत कहिए विवत्। कुमात श्रमिएस करा, किन मानी केत छरा, হবে যাহা বিধির লিখন।। কেতকী কহিছে পুন, নাহি জানি তব গুণ, নূপ কিন্তু কালান্তক কাল। আমি ছবিনী গোপিনী, ভাল মন্দ নাহি জানি, পাছে মম ঘটয়ে জঞ্জাল।। এই কথা দোঁহে হয়, হেন কালেতে তথায়, 🥼 উপনীত নপ সৈনাগণ।

ব স্থাছে প্রণাকর, যিনি কোটি শশধর,
দেখি চমকিত সর্বেজন।।
প্রতিমূত্তি থাহা ছিল, তার সঙ্গে মিলাইন,
গ্রেডদ সে কইল গঠন।
নিকটত্ত হয়ে তথে, যোড় কর করি সংক,
নিবেদিল কুমার সদন।।
শুন শুন মহকোর, ভূপনির অভিপ্রায়,
গ্রেখ্য দর্শন করিবারে।
আত্তর যর্ভ্যক, না করি ইহাতে ব্যাক্স.

অতএন সুর্য়জ, না করি ইংকে ব্যাক্স. চল শীঘ্র রাজ দর্বারে ॥ শুনিয়ে এরূপ ভাষ, যাইতে ভূপের পাশ,

উল্লাসে কুমার করে বেশ।

একে ৰূপ চমৎকার, অধিক কি কব আরি, বর্ণনা না হয় প্রতিশেষ।।

চলিল দূতের সঞ্জে কণেক মজে আড়েকে,

ভাবে মনে কি হবে দে গেলে। ধৃত্তপিণ দেখি মোর, হইয়ে রাগেতে ভোর,

না জানি বা কোন থেলা থেলে।। এখানেতে নরপতি, চিন্তায় চিন্তিত মতি, নভাসদ লইয়ে সভায়। হেন কালে ভ্তা সঙ্গে, কুমার আসিয়ে রঙ্গে,
সভা মাঝে হইল উদয়।।
দেখি ৰূপ অপৰূপ মনে মনে ভাবে ভূপ,
কে বটে কেননে জানা থাবে।
দিজ বুঝি অভিপ্রায়, হেসে নূপতিরে কয়,
পরিচয় লহ টের পাবে!।

কুমারের পরিচয় এবং বিবাহ।

ভদন্তরে লইয়ে কুমারে স্থানরে।
বসঃইল সিংহাসমে ধরি ভার করে।
জিজ্ঞাসিল নররায় কিবা তব নাম।
কাহার তন্য় তুমি কোথা তব ধাম।
দেব বক্ষ অপ্সর কি হইবে মানব।
যে দেখি ভোমার কর্ম অতি অসম্ভব।
দেবতা দানব নহি শুন পরিচয়।।
কাঞ্চনের অধিপতি সত্যধৃতি রায়।
স্থরনেন নাম মম তাঁহার তন্য়।

দেবীদত্ত বিদ্ধ মন্ত্র আছিল আমার। भिर वटन कति एक काम्प्रया वराशात ॥ পুলকিও হয়ে ভূপ শুনি পরিচয়। মনে মনে করে এ সামান্য ব্যক্তি নয়। কন্যা যোগ্য বর এই রাজারে নন্দন 🗀 শুভ দিন দেখি কন্যা করিব অপণ। তার পরে কুমারেরে কহে নূপবর। মম ক্ল্যা রূপে ধন্যা তারে বিজ্ঞাকর 🛚 গুনিয়ে কুমার মনে আননদ অপার। 'অন্তরে আনন্দ মুখে না করে প্রচার 🛚 বুঝি অভিপ্রায় রায় সভায় বসিয়ে। সভা জনে আত্মগণে কহিছে হাসিয়ে। শুন সবে সুর্ক্তিণী আমরে বালিকা। ৰূপে তার ত্রিভুবন মোহন কারিকা।। বিভা না করিবে পূর্বে ছিল তার পণ। সন্মতি হয়েছে এবে করিতে বরণ। পূর্বেকত নৃপস্থত তার আশে আসে। নিরাশ ২ইয়ে গেল মনের হুতাশে 🛭 এই হেডু সর্বাদা অস্থুখ ছিল মোর। বিধাতা সদয় হয়ে ঘুচায় সে ঘোর ।

वह जान्वसार शाद्ध मा भारत जुवरन। ঈশ্বর ইক্ষায় এবে মিলিল সদনে !! মম্মন এইকণ বিভাদিত তার। भव्यक्षन चार्याजन करहर र्हात ॥ হেন শুনে দাসগণে হই য়ে ভংগর। নির্মাইল প্রশেভন স্থানে স্থানে হর।। হালকাি দপণে ভিত্তি ক্রিক মড়িত। কত ছবি যিনি রবি তাহাতে খড়িত।। মিনেকারি সারি সারি হতে। স্ত্রিপ্তার। স্থানে স্থানে শোভ, পায় ঝাড় চকৎকার !! स्राकामन मर्थमन शांदर बहाजान। र्थाना खरा मानाविध द्वार्थ उस्म उस्म ॥ সাসি দ্বারা সব দার অতি স্থানোভন। কত আর কব তার করিয়ে বর্ণন !! তৎপরে তৎপর হয়ে দূতগণ গিয়ে। বাদ্যকর বহুতর আনিল ডাকিয়ে॥ স্থানে স্থানে কোন জনে পত্ৰ লয়ে গেল। নিমন্ত্রণ পেয়ে সবে আসিতে লাগিল। বাই ভাঁড় নট আদি আসি কত জন। भीज वामा भटहारमत कान मक्तान "

** ***

> নহবত্নান মত বাজে দিবা নিশি! বাজে তোল কিবা রোল স্বস্থুর বাঁশী। ে তেণু বীণা শব্দ বিনা নাহি গুনি বাণী। ঘড়ি ঘড়ি বাঙ্গে ঘড়ি সাধ্য কি বাখানি । অংহ্লাদে হইয়ে নগ্রণতির মন। শুভ দিনে শুভ লয় কৈল নিৰ্বাপণ । কন্যা পাত্র দোঁহাকারে ব্যায়ে আসনে। তইল হরিদ্রা আদি মাখায় যতনে 🛚 তার্প জল আনি দৌহে স্থান করাইল : मामाविष चाएत्र च८क्र श्राहेत।। नर्वी मदव मह्हाध्मद्य निमश इहेट्स । भरनामार्य नाकाहेर्छ गृत्भत उभरत्।। অলকা তিলকা দিল যা যেখানে সাজে। তারা মাজ ধিজরাজ যেমন বিরাজে !! ষেমন নায়িকা যোগ্য নায়ক তেমন। যেই অঙ্গে যাহা সাজে দিল সেইক্ষণ।। ভদন্তরে কুমারেরে বসায়ে আসনে। জ্ঞী আচার ব্যবহার করে রামাগণে।। ভার পর মৃপবর শুভক্ষণ করি। करत करत कुमारतरत मॅलिन कुमाती॥

দ্যা মেলি ছলছেলি আননদ অপার। বাদ্যভাগু মহাকাণ্ড আক্ষর্য ব্যাপার। এই ৰূপ দিল ভূপ বিভা বিধি মত। দীন দিজ করে ইহা সংক্ষেপে রচিত :

রামাগণের পরিহাস।

স্থীগণ ভদন্তরে, পরিহাত করিবারে, বাসরেতে করিল গ্রম :

ভবনের শোভা করি, বসিলেন সংবি সারি, বুঝিবারে রশিক রতন।।

একে সে মোহন ৰূপ, আর তাহে রসকূপ, দেখি মন্মধেতে মজে সবে।

এক চিত্তে নির্কাণ, করি রছে সর্বাজন, ভাবে সবে কিবা কথা করে।।

পরে ধনীর সঞ্জিনী, হাসি হাসি কৃত্রে বাণী, মনোচোর এই জন বটে।

আর কোথা পলাইবে, আছে সবে বুঝা যাবে, যদি আজি পেয়েছি নিকটে॥

কোন জন হাসি কয়, দেখি বড় ভয় হয়, পাছে মন কৰ্মাে ছবল। চোর সজে আলাপন, নাহি করে কোন জন।
পূর্বাগার কংহ সাধুজন।
আর জন হাসি কয়, যা কহিলে নিথা নয়,

আর না সাজিবে সে চাতুরী!

কিছু ভর নাহি আর. ইকার যে স্থবিচার: করিবেন নারশকুমারী 🛊

শুনি কথা রসরাজ, না করিয়ে ক্রণ স্থান, মৃত্য হাসি কচেন তথন।

হেন বিপরীত ভবে, শুনিয়ে লাগে তরাস,

চেরে বল না বুঝি করেণ।।

তক বার দেখি যায়, প্রাণ মন সব যায়,

তার মন কে হরিতে পারে।

শশধরে মূল অঙ্গ, সেই ৰূপ একলঙ্ক,

(मर्थ मृद्य विद्युचन) कृद्य ॥

তবে যে মন্ত্রণা করে, রাজকন্যা পাশে মোরে,

ষন্ত্রণা দিবে কি অতিশয়।

আছি তাহে উপনীত, যাহ। আছে মনোনীত, কর তাহা যাহা মনে লয়।।

্বাধি জাদ কারাগারে, না হয় রাখুন মোর্বন ্হান্তুন কটাক্ষ তীক্ষ্বাণ। নহে প্রেম রজ্জু বেড়ি, দেন মোর হাতে কড়ি, হিদে দেন ৬ কুচ পাবাণ।।

কিন্ধর হইলে পরে, ভারে ক্ষমা সবে করে, সর্বত্রেতে এই বাবহার।

না সানি এ বেশাচার, কি আচার কি বিচার। ইক্ষা যেই কর নে প্রকার।:

श्वि अप्रकृष याणी, शहरण मूलल्लामी,

যে মোর মানস ছিল, বিধি তাহা মিলাইল, কিন্তু এক অ'ছেয়ে বাসনা॥

গোপনে যথন মেণরে, ছলি গেল ছলা করে, জানাইয়ে গুণ আপনরে।

তাহে মম পরিচয়, না পাইল রসময়,

আজি আমি স্থবিব সে ধার।। হেন স্থির করি মনে, কহে সখী সম্বোধনে,

खन मत्त वहन खामात्।

উত্তরে উত্তর দিতে, দোষ নাহি কোন মতে, বিধিমতে বিধি বিধাতার ৷

সামান্য ধনের চোরে, রাথে সবে কারাগারে, পদ বেড়ি বেড়ি দিয়া তার।

এচোৱে উচিত বেই, সে ৰূপ য়দি বা দেই, প্রেমোদয়ে হবে প্রেমদার॥ य हिन जामाद প्रा, भिलाइ उ मुश्रम, র্সিক না হয়ে রাজি কর। বিধির যাবেদি খাকে, অবশ্য তা ঘটে তাকে, भाकी काजिमाभ कविवत । उत्त यनि भरत दन, शर्क कादा किरम इन, সে সব পরের উপদেশ। শন্ত মন্ত্র বৰ্ণে হেন, মজেছে আমার মন. এফণে দে বাক্ত সবিশেষ।। र्श्वन यङ भशी करा, मङ। वर्षे प्रिशा नश्र, ব্যাবে কোথা বুকে পিক স্বর । **সংসারে** রমণী পদ, রসিক অঞ্<mark>ক ভূষণ,</mark> ইথে সবে করে হতাদর।। **(मृ**थिएक समञा हत्न, कावा तम ना शाकित्स, তবে ৰূপা নব্য কাল ভার। এইৰূপ ৰাঙ্গ বাণী, কহিছে যতেক ধনী, শুনি কথা কহিছে কুমার।। বুঝিলে ত স্থীগণ, যেমন চোরের মন, • .

বলে রাখ হৃদি কারাগারে।

ইথে ভাবে বুঝা যায়, আছে কোন অভিপ্রায়, চোর মর্মা কে বুঝিতে পারে !!

আছে পূর্কাপর চোরে, রাখে দবে বন্দী করে, এচোরে উচিত সেই দও

কিন্তু ক্ৰি মাজে যম, যে ধন আছে উত্তম, পাছে হন হরিতে প্রচণ্ড॥

ছরিলে পরের ধন জানিতে চোরের মন, কি বিশ্বাদে বাখি ধনাগারে।

নারীর সর্বাস্থ ধন হাদে তঃ আছে স্থাপন,

যদি চোর চুরি করে ভারে॥

অতএব চোরে সখি, নয়নে নয়নে রাখি,

क्र भाज ना इत् विष्कृषः।

তবে হবে ধনাদায়, ঘুচিবে সকল দায়, মিলনের হইবে প্রভেদ ॥

এই ৰূপ ব্যঙ্গ বাণী, শুনি তবে গুণুমণি, রুদিক রমণী প্রতি কয়।

এসেছি স্থাধের তরে, নর্ন প্রহরী করে,

मत्नाटहात मञ्ज त्यांना नय ॥

না হয় হে ভুজ পালে, বাঁধি রাথ নিজবাসে, সেও ভাল দও যে আমার। রসনা যে রস চার বাঁধ তারে রসনায়,

এই দও উচিত তোমার।

এৰপ কৌভুক দেখে, সধীগণ মনোস্থাথে,
প্রশংসিয়ে নাগরে তথন।

অদ্ধেক রজনী গত, ভাবে ভাব মনোগত,
ক্রমে সবে করিল গমন।।

বিরল পেরে দুজনে, উভয়ে সন্থোব মনে,
স্থানা সাধিতে হল মন।

ছিল নিজ ভাবে কয়, বিফলে যামিনী যায়,
বাঞ্জা পূর্ণ করে এই ফণ।।

নায়ক নায়িকার বিহার।
তদন্তরে চুইজনে পালঙ্গে বসিয়ে।
খায় মিঠা পান গলো আমোদিতে হিয়ে।।
খিলি পূর্ণ করি কত রাখে সহচরী।
রাখিল চন্দন চুয়া কেশর কন্তরী।।
ক্ষীর চিনি মিছরি সন্দেশ নানা মত।
সীতল গল্পার জল কপুরি বাসিত।।
নানাজাতি পূপা মালা রাখে শালাইয়ে।
সে সৌরবে মধুকর আইল মাতিয়ে।।

পিক সৰ কুছরৰ করিতে লাগিল। শুনি দৌহাকার মন মোহিত হইল।। ত্তবে স্থীগণে ধনী করিল ইঞ্চিত আরম্ভ করিল গীত বাদেরে সহিত !৷ মধ্র মৃদক্ষ বাজে আরু নানা যন্ত : মিলাইয়ে তাল মান আলাপে বসস্ত 🛚 মন্দিরা বাজায় কেহ বাজায় ভেয়ুরা। বীনা বংশী আঢ়ি করি বাজে সপ্তসরা।। সঙ্গীতে পণ্ডিত রায় হারাইয়ে জ্ঞান। मधो मटक घटन। यटक आवश्विम भान ॥ শুনি ধনী মোহিত হইয়ে গায় গান। বীনাস্থরে প্রিস্থরে মিলাইয়ে তান।। দোঁহাকার স্বরে স্মর হৃদয় ভেদিল। ছাড়ি গাত স্মর্হিত আরম্ব করিল।। দেখি স্থীগণ যন্ত্র তক্ত কেলাইরে। লাজে স্থানাস্তরে সবে গেল পলাইয়ে।। লজ্জা শিরে বজু ভবে হানি **তুইজন।** সাধিতে অরের কর্ম সমর্পিল মন 🖡 ঘন ঘন অবিলয় নিতয় তুলিছে। খন খন চরণেতে ঘুঙ্গুর বাজিছে।।

আবেশে অবশ অঙ্গ ছীনি ভুজন্ম। । চন্দ্রাননে চন্দ্রানন কিবা স্থরোদয়।। ক:মের সাধার তবে প্রেমে উথলিল। মন্তন দত্তেতে হায় মথিতে লাগিল।। নজ্ঞা পেয়ে লজ্ঞা তবে কোথা পালাইল। ভয় ভেক্টে ভয় তবে অভয় পাইল। हन्दानान (इति ऋथा जाननः जाशात । মনের আবেশে পান করিছে কুমার। নাগর সাগর মত্তে করি তথাজ্ঞান। जमिन जुनिएस धनी मुद्ध मिल পान।। স্থির দেখি নয়নে নয়ন সে সময়। নিবাইল কামানল জলে জলময়॥ বিধিমতে কাম ত্রত করি উচ্চাগন। আন্তে দোঁহে নিড়া যায় হয়ে অতেতন।। षिक निक ভাবে তবে দোঁহাকারে কয়। প্রথমে এতেক প্রেম বহু তঃথে হয়।।

কুমারের স্বদেশ গমনোদ্যোগ।
কিছু দিন এই মত, থাকে সদা হথে রত, '
রসিকেরে লইয়ে কামিনী।

যতেক আছিল খেদ, সে স্ব হুইল ছেদ, নিতা সূপে বঞ্জে য:মিনী ॥ এইকপে দকে।তুকে, মজিরে অলেষ স্কুথে, প্রেমে বদ্ধ হল চুইজন। উভয়ে উভয় প্রাণ, পলকে প্রলয় ভারে. এক ভিল বিনা দরশন !! मिटि हिंदा हारि दय, क्य माख शाषा मन নাহি চায় মুদিতে নয়ন! निज्ञान পालारका भारत, अमारा हो एक विकास স্থান ছের রুহে স্থীগণ।। **এ একারে রুসময়, বঞ্চিরে শ্বশুরালয়.** ব্যগ্র চিত্ত হইল অধিক। মনে ভাবে দেশ ছাড়া, আরু ভ্রাভাগণে হারা, স্থুথ ভোগে আছি মোরে ধিক।। এই সব চিস্তাযুত, হইয়ে নরেক্রস্কত, মনে মনে করে বিবেচনা। কৌশলে সবারে বলি, যাইব দেশেতে চলি, निक्ष कति मटनत कामना।! · ভবে উঠি প্রভাষেতে, গিয়ে নূপ সমী**পে**তে,

नविनद्यं कतं ब्लाट्ड क्या

মনেতে করেছি আশ, যাইব আপন বাস, অনুএকে যদি আজ্ঞা হয়।। গুকে মম পিতা মাতা, আছে সবে চিম্বাশ্বিতা, ছলে মাত্র এমেছি বিদেশ। नाहि तिथि (म भवाय, मर्वमा हश्रन काम, স্থির নয় কি কব বিশেষ। আর এক শভিপ্রায়, সঙ্গে তব চুহিতায়, লয়ে যাব আপন ভবনে! শুনি জামাতার বীণী, সচিন্তিত নপমণি, কহিছেন সজল নানে ! সবে মার এক কন্যে, দোসর নাহিক অন্যে পুত্রাধিক পেয়েছি তোমারে। ভোমা দোঁহা ত্যাগ করি, রহিব এপ্রাণ ধূরি. क्मिर्म दल नां अ भरभारत ॥ এইৰপে নর রায়, কহি বহু জামাভায়, পরে হল পাঠাতে সম্বাত। ডাকি যত আত্ম জনে, আরু সেনাধ্যক্ষগণে, সবিশেষ কহেন ভূপতি॥ कना आत कामाजाय, याद क्रांट निकानम আয়োজন কর সে ভাবত।

যে আজ্ঞা বলিয়ে সায়, দিয়ে দূতগণ ধায়, চতুৰ্দিগে ধায় শত শত ॥

আনিল জাহাল কত, বজ্বা পিনিশ শড়ে

शलुक जाउँता अध्यतः।

হয়ে অতি ত্বরান্তিত, আনিলেক মনোনীত, গতি বেগে যেমন প্রবন্ধ

নানা বিধ খাদা চন্ত্র, চুর্বা চোষা **লেহ্য পের,** করিলেফ পরিপূর্ণ ভরী।

র্ডাডি মাজী করি মাজ মস্তকে পরিয়ে ভাজ পত্যকা ভূলিল যাত্রা করি।।

ক্রানাত। যৌতুক আদি, দিল নানা রত্নে নিধি, বহু দ্বা ভূবন রঞ্জন।

ভূষণ মাণিক হার, কি ক্রন বিস্তার তার,

প্ৰবালাদি বুজত কাঞ্চন ॥

দাস দাসী কত জন, সঙ্গেতে দিল রাজন, তবে যাত্রা করে শুভক্ষণে।

পরে গিয়ে স্থামুখা, ছল ছল করি অঁ।পি. প্রণমিল জননী চরণে ॥

ৰলে মা কর বিদায়, যাইব শুশুরালয়, শুনি বাদী বিহাদিক মন। কোনে পাঠাব আমি, দরিছের ধন ভূমি,
প্রাণ ধন নয়ন অঞ্চন ॥
ভিজ গিয়ে কহে বাণী, শুন ওগো রাজ বাণি,
কেন থেদ কর অকারণ।
দেখ ভূমি সর্ব্বে স্থল, কোথার শুনেছ দল,
পিতালয়ে কনার শোলন ॥

নায়ক নায়িকার বিদায় ও উদয় নগরে উপস্থিত।

এই ৰূপ থেদ রাণী করিল বিস্তর!
তনয়ারে স্থাক্ষিত করে তদন্তর ।
হরিদ্রা মাঝারে অফে দিল অভরণ।
আল্তা চরণে দিল দেখিতে শোভন।
খাদা দ্রবা নানা বিপ করায়ে ভোজন।
কন্যারে পাঠান রাণী চুয়িয়ে বদন।
তবে পিতা মাভা পদে প্রণমিষে পনী।
স্থামির সহিত চলে যথায় তরণা।
শুভক্ষণে মৃই জনে আরোহিতে ভরি।
অমনি দামামা ডক্কা উঠিল লহরী।

मात्र मात्री देशनाशंश करत महारताल। শব্দেতে না পায় কেহ শুনিবারে বোল। গুলিল জাহাজ তবে ছাড়ি সেই দেশ। কভ শত নগর ছাড়িল অবশেষ ! এমতে যাইতে পথে কিছু দিন পরে। উপনীত হল शिद्य छेमग्र नगर्त ॥ বেলা অবসানে ভবে অস্ব আরেছিণে ! গুসজ্জিত হয়ে রায় গেলেন ভ্রমণে 🖟 তার পরে সে নগরে স্থানে স্থানে ফিরি। দেখিল অপূর্ব্ব এক সুনির্মিত পুরি । প্রস্থরেতে সব গৃগ দ্বার সুনিমিতি। পুস্পোদ্যান স্থানে স্থানে আছরে রচিত !! এইৰূপ শোভা দেখি নরেশ নন্দ ন। আপন জাহাজে পরে করিল গমন।। পথে যেতে স্বচক্ষে করিল দুরশন। রাজ পথে চলে যায় কারাবাসীগণ্য তার মধ্যে দেখে তার ছয় সহোদর। বুঝিতে না পাছর মশ্ব ভাবিত অন্তর।। কি মতে এমত কর্ম হবে তা স্বার। মনে ভাবে জ্রমে বুঝি দেখি এপ্রকার ॥

এইৰূপ বিবেচিয়ে নিকটে আইল। দেখি স্বাকার দশা খেদ উপজিল।। প্রস্পর সবে সবে করি নিরীক্ষণ : অন্তির হইয়ে সবে করয়ে রোদন।। বহু দিন পরে সেই বিচ্ছেদ অনল! মিলনে হইল আরো দিগুণ এবল 🛭 এ প্রকারে সবে মেলি ধৈন। নাহি ধরে। শেকেতে নিময় হয়ে হাহাকার করে 🔢 পরে যে রক্ষকগণে বজু রত্ন দিয়ে। অপেন জাহাজে গেল সহারে লইরে॥ চির্দিন বিচ্ছেদেতে যে সব অন**ল**। শোকানলে আঁথি জলে নিভায় সকল । **उम्हात कूमात म्याय स्थाहेल।** বল শুনি এছুর্ঘ ট কেমনে ঘটিল।। मुभिष्ठे वात्कारङ তবে ছয় महम्दत । অনুদ্য অন্ত সমাচার কহে কুমারেরে !! (य करिंग ताकमी भरक अतर्ग अभिन । একে একে সে সকল বৃ**দ্ধান্ত ক**হিল।। যেহেতুতে কারাবাস হয়েছে সবার। **একে একে সমুদর কছে সমাচার।।**

আশ্রহা মানিল শুনি স্বার বচন। পরে আপনার যত ক্তে বিবর্ণ ১ তার পরে স্বাকারে মলেভে ক্মার। খাদ্য জবা নানা বিধ কঠান জাতার :: এ**ই স**ৰু মহানন্দ সাৰে মেলি করে : ইতি মধ্যে কার(ধ্যক্ষ আইল সন্তুরে॥ বলে মহাশয় আমা সংব্দেপ। করি। ८मर ছग्र कात्रानानी हहेन नक्षत्रे । শুনি কথা দুপস্ত ভা সবালে কয় ৷ অন্য নিশি রাখি যাত হইয়ে সদ্র 🛚 এক বলি পুনরায় বহু ধন বিল। সম্বর্ষ হইয়ে সাবে বিদায় হইল !! ভবে সবে এক ভাবে একত্র হইয়ে! স্থাতে বঞ্চায় নিশি কৌতুক ফরিয়ে॥ নিশি শেষ করি পরে ভাই সাত জন। প্রভাতে উঠিল শ্বরি শ্রীতুর্গা চরণ ।৷ নিত্য যত কর্ম তবে করি সমাধান। কুমার বসিয়ে ভাবে দবার বিধান। কি প্রকারে এসবারে করিব উদ্ধার। ভাবিয়ে চিস্তিয়ে কিছু নাপাই ইহার।।

ইতোমধে কারাধাক আদি দেই স্থলে भारत करता क्यारतस्य मकक्**रण रा**ल ॥ দেহ ছয় কারাবাগী দয়া **করি সবে।** লচেত শুনিলে ভূপ মেরে প্রাণ পরে গ ণ্ডনি বাণী অমনি প্রথমি ছয়জনে। যিনতি পুরাক সার কল্ডে সক্রুণে ॥ যাহ অদা মম সাধা কি বা আছে খার অবিল থালি মধো আমি করিব উদ্ধরে । এত বলি কার্বাক্সগণেরে ভাকিলে ৷ হাতে ধরি সবাকারে দিল সমপিয়ে ।। मतः,न कहिन शात मातृश मलन ! র-সিবে এসবাফারে করিটে <mark>যতন।।</mark> নিত্য থানি দেখা করাইবে একবার। বহ ধনে ভোমারে করিব পুরস্কার ॥ একথা শুনিয়ে সবে যে আছ্ডা বলিয়ে ৷ য**ে হ**য় সহোদরে চলিল লইয়ে।। ভদন্তরে কুমার ভাবিত মনে মনে। ি প্রকারে এসবারে উন্ধারি কেমনে॥ কিস বলে কেন ভাব রাজার নন্দন। মত্ৰ বলে আছে তব অসাধ্য সাধন।।

কুমারের মন্ত্র বলে উদয় রাজ কন্যা ভবনে প্রবেশ !

শুনি বুদ্রাজা, করি নিজ যাজ, চলে অভি জ্ঞা কৰি। ভবি নানা স্থান, করিল প্রান শশ্রেরকেরে গুরি। মু ভূব ব্রেপ্ড, লা চেনে অনেট্ড, स्थितियाः भव करात्र । জুরপর ভবন, কেলিয়ু লোভন, राज्ञ परा अम्हिस्स । গর পর গিয়ে, নগ্রনে দেখিয়ে, রা ার অন্দর বত। যেতে এপ্রকারে, কন্যার আগারে, শোষ হল উপনীত।। जाम मार्थी शहर, मां ६६ हत मशहम, গোপ্রে থাকেন রায়। न्त्रित निक्ती, मक्ष स्वतिभी,

হেরিয়া পুলকে কায়।।

তা সবাব ৰূপা, নাহিক স্বৰূপা, অনুপ্র জিজগতে। একেতো ৰূপনী, ভাহাতে ঘোড্নী, ব্যাহ্যে পালক্ষেতে।। দেখিলে কামিনী, জগত মোহিনী, গেছিও হইল মন। are कि अकारत. हिंन धमतादर. কি কপে হবে মিলন।। এক ভাগি বাস, চাতকের প্রায়, দেখা দিল স্বাৰ্ণাৱে। কাণকাল পালে. চলিল সভাৱে, আগের ক কোল পরে । ছেতা রূপ হেরি, সে মুগ্র **প্রদা**রী, অব্ধ হইয়ে অস্থে ! ধরাতলে পড়ি, বায় গড়াগড়ি, महीच माक व्यमक !! দেখি যত দাসী, দ্ৰুতগতি আসি. ধবাধবি কবি তোলে। कि इल कि इल, वल मशीमल, সকলে করিল কোলে॥

व्यानमः-।वनागः

वाकाव कुमावी, भगख सम्बती, কহে সবে মৃত্তম্বরে। বিছাত আকার, আমা ধ্বাকার, শরীর ভেদিল **স্বরে**। যৌবন সাগর, অপার ছস্তার, আম্বা ত্রণী ক্ষীণ। वैं कित क्यारन, वित्रह आ'अरन. इहास नाविक हीन। स्ति मशीश्रेश, करत निर्देशन. ধৈৰ্ঘা হও ৱাজবালা। ধৈর্গ্য হলে পরে, মিলিবেক ভারে, অবশা ঘুচিবে জালা!! এই कथा व्यक्ति गत्त्रम निक्ती মনে মনে বসি ভাবে। দ্বিজ্ঞ বলে তবে, কেন ভাব সবে, আজি কালি মধ্যে পাবে।।

কুমারের অদর্শনে কুমারীগণের খেদ।

এমতে সকলে বিমনা হয়ে। পাইব কেমনে ভাবে বসিয়ে।। রাজাব তুহিতা মোরা সকলে। **ख्रां किन इंग्लंड क्रिश्रां ।** যাহার শাদনে সমনে ভরে। ভাহার ভবনে কি আসিবে নরে ট যে হক সে হবে আ মরি মরি। প্রাণেতে বঁ।চিমে পুন না হেরি॥ কি করি কি করি বহিবে মান ৷ একে নারী নারি রাখিতে প্রাণ।। স্ত্রীর পতি বিনা গতি কি আন। বাঁচাও না বাঁচা এক সমান।। কামিনীর তারা আঁখি পতি। তারা হিন জন নাহিক গতি॥ সহেনা যাতনা আ মার মার। গরল খাইব মনেতে করি ॥

এখনি আমরা প্রাণ তেজিব। অনলের মুখে আজি পড়িব ! এৰপে করিতে আক্রেপ ধুনি। বুঝাইল ভারে যত রমণি।। এমত দেখিয়ে সে मश्री मला। স্থান: হার সবে করায় বলে .' এখানে র্সিক গিয়ে ত্র্রিভে। ব্যিক গণেবে লাগে ভানিভে 🖰 ক্ষণ কলে পরে রাজ কুমার। **স্থানাদি ক**রিয়ে করে আহার। এমত কালে চয় ভাতাসনে। আইল তথায় রক্ষকগণে॥ দেখিয়ে কুমার হয়িত হয়ে! नाना ज्वा भवा जुक्षाः। नास् ॥ পরেতে সকলে বিদায় হয়ে। কারাধ্যক সনে গেল চলিয়ে 🛚 দেখিয়ে এমত দৃষ্ট ঘটনা: দ্বিকের মনেতে হল ভাবনা।।

সর্ব কনিষ্ঠা কুমারীর সহিত কুমারের সাক্ষাৎ।

নানা মতে ভাবি তবে নৱেশ নক্ষন ! বেলা অবসানে চলে করিতে ভ্রমণ।। बाक भाष हित यात इत्य सम्बद्धाः । আশ্চর্যা শুনহ্ তাহে দৈবের ঘটিত 🛚 नद्रम निम्नी भर्षा क्रिके एय कन সবে হতে শ্ৰেষ্ঠ ৰূপে স্নদৃশ্য গঠন 🖰 যে অবধি কুমারে সে দেখিছে নয়নে দিবা নিশি ভাবে বসি আপনার মনে।। বার ঝর ধারা বহে নয়নেতে ভার। বিরহ জালাতে সদা দেখেছে আঁধার ৷ স্থ সজ্জ। আর কিছু মনে নাহি লয়। এলাইত কেশে পড়ি ধরা তলে রয়।। যে জন কথন কোন জানে না বেদনা তারে সহ্য কোথা হয় বিরহ্ যাতনা 🖰 তাহাতে বসম্ভ কাল কুটিল কোকিল। তসিল মসিল দায় দত্তে লাগে খিল।।

এৰপ অধৈষ্য হয়ে বেলা অবসানে।
গবাকের দারে বসি চায় পথ পানে।
হেন কালে সেই পথে রিকি বতন।
অখাৰতে চলি যায় কৈল নিরীক্ষণ।
বে কপ অন্তরে ভাবে মন্মথমোহিনী।
নে কপ অন্তরে দেখি আফলানিত ধনী।
কুমার তাহারে পরে করি নিরীক্ষণ।
হৈল ভাহার ৰূপ তরক্ষে মগন।।
মিলন সালিল আশা মন মধ্যে করি।
উত্রে রহিল উভয়ের পানে হেরি।
পিরাও যার যা বাঞ্জা এইত সময়॥

কুমারকে রাজ কুমারীর নিজ ভবনে আনয়নের পরামর্শ।

দেখি দোঁহে ছুই জন, মন হল উচাটন, কামিনী অধিক ব্যস্ত তায়! .গিয়ে নিজ সখী পাশে, অতি মৃছু মৃছু ভাবে, বিবরণ কহে সমুদায়॥

ঐ দেখ সহচরি, মম মন চুরি করি, যায় সেই পুরুষ রতন। স্থী শীঘ্ৰ গতি যাও, সঙ্গোপনে বাৰ্ত্তা লও. কিবা নাম কোথা নিকেতন।। আছে কোথা বাসা কবি, স্বাপন চক্ষেতে হেরি, এসে বল মম সন্তিধানে। श्वीन मधी अवहम, कविल भीख श्रमन, নপের নক্ষন যেই স্থানে।। করি কত সবিনয়, কহে কই মহাশয়, কিবা নাম কোথায় নিবাস। আছ কোথা করি বাসা, কহ মরে সত্য ভাষা, অভিলাষ করিয়ে প্রকাশ।। আশয় বুঝিয়ে তার, তদন্তরে দে কুমার, কহিতেছে সখীর সদন। যে ভাবে এসেছ তুমি, সে ভাবনা ভাবি আমি, পরিচয় করহ ভাবণ।। বঙ্গাধিক্য মম ধাম, সুরসেন ধরি নাম, অবিশ্রাম জমি নানা দেশ। অর্নেক নগর ফিরি, বাহন করিয়ে তরি, এনগরে আসি অবশেষ।।

করেছি নৌকায় বাসা, শুনি এ আশ্চর্য্য ভাষান আমি মাত্র জানিতে কারণ। কি কব করি প্রকাশ, মনে যাহা অভিলায,

ফর কার, প্রকাশ, মধ্যে বাহা আগুলাও, - রেখেছি ভাকরিয়ে বারণা।

क्षित मामी शून कहा, छन क्षन इसमझ,

কিবা ভয় করিছ আপনি।

তব ষংহা অভিপ্রায়, বুকেছি তা সম্দায়, আমি মিলংইব গুণমণি॥

এৰণ কুমারে বলি, ক্রত গতি যায় চলি। যথায় আছেন রাজস্তা।

ষতে হ কর্ণে শুনিল, সর গিয়ে নিবেদিল, হইরে পরম হয় যুভা।।

শুনিয়ে এসব বাণী, পুন তারে কছে ধনী,

ষাহ সধী আন গিয়ে তারে।

করি তাঁরে দরশন, কব সব বিবরণ,

বে ৰূপে পাবেন মো সবারে॥

শুনি সথী কর যোড়ে, কহে ধনী বরাবরে, একি কথা কহ ঠাকুরাণি।

যে পুরে শমন ডরে, ফেমনে আসিবে নরে, ভয় হয় শুনি তব বাণী ॥ পরে শুনি ধনি কয়, কেন তব এত ভয়,
অদীম নাদীমা হয় যাঁর।
দ্বিজ বলে হেন জনে, অসাধা কি ত্রিভুবনে,
তিনি ভাবিবেন পথ তার।

কুমারের কুমারী সদনে উপনীত।

এতেক শুনিয়ে সখী যায় চলি জ্রুত।

যথায় নরেন্দু স্থুত তথা উপনিত।।

কুমারীর রিবরণ কহিল নকল।

যেতে হবে রদরাজ শীঘ্র চল চল।।
শুনি বাণী অমনি সখীরে কহে রার।

যাহ অগ্রে কহ তারে যাইব তথায়।।
এত বলি দূতীরে বিদায় করি দিল।

মন্ত্র পড়ি পাছে পাছে কুমার চলিল।।
এখানে স্থুন্দরী আশা পথ চেয়ে ছিল।

হেন কালে পূর্ব্বমত কুমারে দেখিল।।
তবে স্থুবদনি ধনী তথনি উঠিয়ে।
বসাইল সমাদরে নাগরে লইন্ধে।।

নাগরের মনঃ প্রাণ করিতে হরণ। ञ्चायुथी स्थानम कल्टिह वहन।। ভাজি লাজ রসরাজ কহি হে ভোমারে। দেখা দিয়ে কটাকেতে ব্ৰহ্ আমারে॥ যে দিনে আমরা সবে দেখেছি ভোমার। বিশেষ ব্যানিত তায় হয়েছে হৃদয়।। নতুব। কখন কেলা রমণী হইয়ে। অত্যে কথা কহে কোথা পুৰুষে ডাকিয়ে 🛭 তবে আর অধিনীরে কেন হে নিদয়। আছে। কর পরে মালা দিব মহাশয়॥ তদন্তরে কুমার ভাবিরে মনে মনে : বুকিল বিবাহ নহে উচিত এক্ষণে।। चुकारम कहित कांधा राज्य श्रव भारत। অপ্যশ ঘটিবে কলঙ্ক দেশে দেশে ॥ বিশেষত কারা বন্ধ আছে ভ্রাতাগণ। তা সবারে কোন ছলে করিব মোচন।। একণে উচিত এই সম্মতি লইয়ে। বিবাহ করিব পরে প্রতিজ্ঞা পুরিয়ে॥ তাহাতে হইবে মোর সর্বত্তে যশ। সর্ব্ব কার্য্য সিদ্ধ হবে এ মোর মানস।।

এত ভাবি কামিনীরে কহে রসময়! टा कहित्व (इन कर्य कड़ जाव नय ।। দেহেতু ভূপের পণ অগ্রাহা করিয়ে। বরিবে আখারে ভূমি কামে মত্ত হয়ে।। ণেহেতু উদ্দেশ বলি দাও হে আমারে। যাহাতে চিনিতে পারি ভোমা স্বাকারে 🖰 শুনিয়ে আফলাদে মগ্ন হইয়ে অশেষ। বিবাহ প্রতিজ্ঞা পূর্ণ করে উপ**দেশ**।। শুন হে বুসিক বাজ মো সবার পণ। একারতি আছি মোর। ভগ্নী সপ্তজন। যে দিনে চিনিতে ভূমি যাবে রাজ বাসে। শ্রেণীবদ্ধ দৰে রব স্বাকার পালে।। মম পানে মম জোঠ শুন ওছে রায়া এ প্রকারে রব তাহে নাহিক সংশয়।। বিশ্বতি না হয়ে থেক নিমুভাগে হেরি। মৃত্তিক। খুঁড়িব পদ অঙ্গুলিতে করি।। ইহাতে বুঝিবে সধা যে যেখানে রবে। ষিজ বলে আর তব বলিতে না হবে।।

কুমারকে কু মারী পরামশ দেন।

উপদেশ পেয়ে রায় চাহিল বিদায়। কথা শুনি ভাবে ধনী বিচ্ছেদের দার। কহিছে কুকুণা করি হয়ে সকাত্র ! অধিক কি কৰ আৰু শুন হে নাগৰ।। প্রাণ পণ করি তবে গেনেজি ভো**মা**য়। कि कट्ट उन्न द्वान आद्य क्रिव विमान ॥ আর কিছু ক্ষণ থাক করি নিরীক্ষণ। ষ্টাথি স্থির হলে প্রাণ করিবে গমন।। আমি কি বলিব তবে যে হয় উচিত। বুঝে স্থঝে কর যাহা হয় স্থবিহিত ॥ কি দিব বিদায় আর করি অনুমান। সবে ধন ছিল প্রাণ করিয়াছি দান।। প্ৰাণ ৰূপ পক্ষী তব সঙ্গেতে চলিল। এদেহ পিঞ্জর মাত্র পড়িয়ে রহিল।। এমত করুণা বাকে। নাগরে ভূষিয়ে। বিদায় করিল শেষ কাতর হইয়ে॥

ত্ববিত গমনে তবে রসিক রতন। অপেন জাহাজে পরে করিল গমন ॥ পর দিন প্রভাতে করিরে নিজবেশ। ভূপের ভবনে গিয়ে উত্তরিল শেষ 🖰 জানি নীত উপনীত যথা ঘণ্টা ছিল। কুমার ধরিয়ে ভাচে ঘন বাজাইল।। त्तरें धनी ज्ञामि छनिता धारत। माम এक भाष्ठाटलन कुमात अन्दन॥ যোড় করে কুমারের করি সমাদর। বলে চল মহাশর ভূপের গোচর।। ঞত মাত্র নৃপস্থত ভাবি রাজনীত। ভাবে ভৃত্য বাক্যে মম যাও খনুচিত।। তদন্তর কুমার এগব বিবেচিয়ে। পাস্কচারি করি ফেরে বাক্য না কছিয়ে 🛭 না বুঝিয়া মর্মা কিছু দাস সেই জন। যাইয়ে ভূপের পালে কহে বিবরণ ধ বু**জিমন্ত নরকান্ত** বুঝিয়ে ভাহায়। প্রেরণ করিল এক মন্ত্রীরে তথায়॥ ভ্যানবান মৃদ্রিবর বিচক্ষণ অতি। নৃপস্থত ৰূপ দেখি হল ক্ট মতি।।

পরে বছ সমাদরে তুবি মিন্ট ভাবে। কুমারে লইয়ে গেল ভুপতির পাশে !! নরেশ দেখিয়ে রূপ প্রশংসি বিস্তর। म श्रीयन कति वह कटत मगांति ॥ পরে পরিচয় পেয়ে আক্সাদিত মতে। যত্র করি বসাইল রত্ন সিংহ। সনে॥ আনে নানা খাদা দ্বা করি আছরণ। কভ কব নাম ভার কে করে বর্ণন । কত মত এপ্রকার করি আয়োজন। নতেশ কুমার ভবে করেন ভোজন । **उम्ख्त कुम**'रह कहिए नत तास। আপনার মন গত যত অভিপ্রায় 🛚 একারতি কন্যা মম আছে সপ্ত জন। ষে চিনিবে ভাহারে করিব সমর্পণ।। না পারিলে কারাগারে রাখিব তাহারে। व्यञ्गिष्ठ इस यनि व्यानि नदाकादत ॥ এমত শুনিয়ে বাক্য হয়ে হৃষ্ট মতি। নরেশ কুমার তাহে হইল সম্মতি। তদন্তর পুলকিত হয়ে নৃপমণি। मश्रीभर्ग पाछा निन पानिए निम्नी।

अनि मात्रीशय मत महामः वन्दन । विविध श्रकारत माजाहेन कनाताता । পরাইল অকে নানা বসন ভূষণ। বিনাইয়ে দিল বেণী অতি স্তুচিকন।। वनम भनम भीन धना धना छता छ। ल करेकि पूर्वटि यूनिशन यन हेटल । একে সে बशमी टाइड माना माज कति। চিক মধ্যে চলি যায় গমনেতে করী 🛊 ভবেত কুমার উঠি সবারে ছেরিল। কটাক্ষে নবার মন মোহিত করিল। আছিল পূৰ্ব্বেতে ৰূপ অন্তরে প্রবন্ধ। पिथितः कृ भारत भव हरेल भी उन ॥ তবে সৰে মনে ভাবে পাইব কেননে। ভতধিক কুমার ভাবিছে মনে মনে 🛭 কামিনির উপদেশ অন্তরে ভাবিয়া। স্বাকার পানে তবে রহিল চাহিয়া 🛭 पिथिन मतात वादम किन्छ। सुन्मती। रुं छिका थनन करत भनाकृति कति। তাহাতে বুঝিল রায় যে বেখানে ছিল। 🦠 **ध्यक्त ध्राप्त किन्न कुरश यानाईन।**

দেপি নরপতি অতি হইয়া উলাস: আনন্দে নিমগ্ন হয়ে লাহি স্বরে ভাষ । ভূপ বলে পূর্বে ভাগ্য আখার আছিল। तिहे (र्जु मय कीर्डि मानन भूतिल। এডবলি আলিঞ্চন করি কুমগরেবে। বসাইল যত্ন করি নিংহাসন পরে॥ তদশুরে র'জপুত্রে কহিল রাজন। বিভা কর যুবরাজ দিন শুভক্ষণ ॥ শুনি বাণি অমনি যুড়িয়া কর দয়। মনে যাহা ছিল ভাহা কছে সমুদয়। তব কন্যা বিভা জন্য ৰন্দি যত জন। অভিপ্রায় দে ববায় করিব মোচন।। শুনি কথা মহিপতি পাইল স্বীকাব। ধিজ বলে ও মতে অমত আছে কার।

ছয় সহদরের কারাগার মুক্ত।
পরে শুন অপরূপ, কারাধ্যক ডাকি ভূপ,
কহিলেন সব বিবরণ।
কুমারের আজ্ঞা মত, আন বন্দিগণ যত,
বধা যোগ্য দেও সবে ধন।

स्विन वाधि ভূতাগণে, আনি वन्ति ये अस्त, क् मात मभीता ममलिल। ঁন্প**স্তু**ত তদন্তর, দিয়া রত্ন বছ তর, স্বাকারে বিদায় করিল। পরে ভ্রাডা ছয় জনে, ভক্তিভাবে স্থট মনে, বসাইল করি সমানর ৷ জাতুগণে জ্যেষ্ঠ ভাবে, নিড হুইতে জ্যেষ্ঠ ভবে, শিষ্ট ভাবে তুষিল বিস্তর 1 সমদত্ত দেখি ভাবে, কুমার যে ভ্রাতৃ সবে, কি ভাবে এভাব ভাবি ভাই। বুঝে রাজা অনুভাবে, কু মারে জিজ্ঞাসে ভবে. এ ছয় জন কে তব সুধাই। श्वनि वानि जूश करा, याङ् कति करामश्र সবাকার যতেক রুতান্ত! যে জন্য ছাড়া ভবন, যেহেতু হইবে পণ, পূনর্কার মিলন একান্ত।। এই মত বাক্য শুনি, আনন্দেতে নৃপমণি. স্বারে করিল আলিঞ্সন। বহুমত সমাদরে, বসায়ে পালক পরে,

একে একে করে সম্ভাষণ !!

পরে ভূপ মৃদ্য ভাষে, কহিছে সবার পাশে, দেহ লোমাঞ্চিত ভারভারে। দিয়াছি মন্ত্রণা যত, সে নব হয়ে বিশ্বত, মোৰে নিজ ১৫৭ কথা কৰ !! শুনি ছয় গুণকেনে, কহিতেছে চচ্চস্করে, কি হেও ভাষাই এ প্রকার। কর্ম্ম স্থতা আছে বাহা, কে খণ্ডিতে পারে তাহা, ইথে দোষ কি আছে ভোমার॥ এই দ্রূপ ব্যক্তা ছলে, মাস্কায় করি দকলে, মূপতি কুমার অণি কয়। ছিল বাঞ্জ যে যাইছে, পূৰ্ণ তা হল স্বার, এফাণে করম পরিণয় ৷ শুনিয়ে এনৰ বানী, মৃড়িয়ে যুগল পাণি, गरीभारत करिए गउत्म। জ্যেষ্ঠ বিদ্যান্ত্য যথা, কেমনে ক্ৰিষ্ঠ তথা, অধিকংবী বিৱস বননে।। অতএব শুন রায়, তব সপ্ত ছুহিতায়, ছর জাতা করিব বিবাহ। ইথে তব অভিপ্রার, উচিত যে মত হয়,

সেই মতে করহ নির্বাহ॥ এই মত বাক্য গুলি ক্ষতিক্তে সঞ্চল হোমা সবা অধিক।র, আমার এ আধক।র,
অধিকার কি বলিব অ'মি॥
ভুমি তব ছয় ভ্রাতা, নাহি মম বিভিন্নতা,
সম ভুলা দেখি সবাকারে।
দিল কয় অকপাটে, এয়াকি সূম্কি বটে,
বিভা কর ছয় ছহিতারে॥

ছয় সংহাদরের বিবাহ। সভায় ব্সিয়ে ওবে ডাকি মন্তাজনে। व्यान्ता पिन भरीशान प्रदा व्यारहर्य। আজা মাত্র প্রত করিল সমুদর। পুরোহিতে ডাকি করে দিনের নির্ণয়। পরে শুভুক্ত। দিনে করি বর বেশ। রত্ন গুহে ছার জনে করয়ে প্রবেশ।। পরে ছয় তুহিতায়ে সপ্ত সিংহাসনে। বস্ভিয়ে আনিল স্বার বিদ্যমানে।। ৰ্ক্ত্রী আচার ব্যবহার ছিল যে প্রকার। প্রদক্ষিণ করাইল সপ্তে সপ্তর্বার ॥ कित्छि क्रिशं किना (कार्ष (कार्ष) कन। এই মত হত্তে হস্ত করিল বন্ধন।। বাদ্য ভাও মহাকাও আনন্দ অপার। এই মত হয় কত আশ্চর্য্য ব্যাপার।

जानम्-।वनामा

নরেশ আনদে মগ্র মনেতে বিচারি। বিধিমতে ছয় জনে সঁপিল কুমারী॥ বিবাচ নির্ম্বাহ দেখি যত রামাণ্ডে। হল।ছলি দেয় সবে আনন্দিত নান। ক্মা পাত্র লয়ে মৰে চলিল বাস্থে: বাজিল বাজনা গায় কিয়র স্তস্তরে! এধ স্বরে বাস ঘরে রামাগণে ক্য। র্নিকা রসিকে ভঁথা শুভ সমুদ্য ॥ स्रशास्त्र हृत्यं कृष्टे त्य बठ हक्त्र। ক্মলের মকরনেদ ভূটী মধ্কর 🖁 स्करन स्कान उथा इर्रेश जिल्हा। বাসর তেজিয়ে ভবে যায় বামাগণ । বিরল পাইয়ে তবে যাতক কুমারে। প্রেম রুপে নবরুসে ভোষে স্বাকারে । নানা মতে করে কছ কবি আলাপন। ভাবে বুঝ এভাবে ভাবক ষেই **জন**॥ সন্তপ্ত আছিল বিরহিণী ধনীগণে। রিগা হল সেই ত্বালা নাগর মিলনে॥ যামিনী প্রভাতে উঠি ছার সহদরে। উপনীত **হল স**বে ভূপ বরা**বরে।** আনক্ষেতে হয়ে মগ্ন সোমদপ্ত রায় ! কৌতুকে জামাতাগণে বসায় সভায়।।

এইৰপে মহানদে নৃপ পুত্ৰগণে। মহায়ুখে সুখা সবে শুশুর ভবনে 🛚 ् कि हू मिन পরে সপ্ত নরেশ তনয়। ভূপের সমীপে গিয়ে সবিনয়ে কয়।। বুধ্দিন দেশ ছাড়ি মোরা ছয় জন। আসিয়াছি বিদেশেতে করিতে ভ্রমণ । . গুহে মাতা পিতা বন্ধু আছে বহু জন। ত্যজিয়ে স্বারে করে প্রাণ উচাটন।। অতএব যদি ভূপ হয় অনুমতি! চিন্তা দূর করি গিয়ে আপন বস্তি।। আর এক অভিপ্রায় মে: নবার মনে। সঙ্গে করে বারে যাব তব কন্যাগণে।। জামতোগণের বাক্য শুনিয়ে রাজন। কহিতে সাগিল হয়ে সঙ্গল নয়ন ॥ কন্যা দিয়ে পাইয়াছি সপ্তগুণ নিধি। পুজাধিক বাসি আমি সে দিন অবধি।। পাঠাইয়ে দিব যদি ভোমা স্বাকারে। কেমনে রহিব বল এছার সংসারে।। এৰপে জামাভাগণে কহিয়ে ভূপতি। পরে পাঠাইতে সবে হইল সন্মতি॥ দিয়ে নানা রতন যৌতুক জামাতায়। কন্যাগণে নররায় কৌতুকে পাঠায়॥

দাস দাসী সজে আর দিল ভূপ কত। মাত্র ত্রজ্গাড়ী পাল্কি শত শত।। আর সপ্ত জাহাজ দিলেন সপ্ততনে পূর্ণিত করিরে নণি মুক্তা আদি ধনে।। थ'ना ज्वा नान! विव जान्ध्या या छिल। ক্রে ক্রমে জাহাজেতে পূর্ণ করি দিল। তবে ক্রাগেণ বাণী নিকটে মাইটে : বিদায় চাহিল পদে প্রথাম করিয়ে ! শুলি অ'হল্যদেতে রাণী চুহ্নিয়ে বদন। খাদা দ্রবা নানা বিধ করায় ভোজন। उपसुत अविस्ति जनक जनमा। স্থামির সহিত চলে লইয়ে দফিনী :: দিন শুভক্ষণে তবে সপ্ত সহদরে। व्याद्वाइन देवल जिल्ला काहाक छेनद्व ॥ राष्ट्रकरा चुलि फिल इद्य द्वर्गवान। ইলাবর্ত্ত দেশ চলে ছাড়ি কত স্থান !! দ্বিজ নিজ ভাবে অগ্ৰে ৰূপবতী পাশে। কুমারের সমাচার কহিল-বিশেষে।।

व्यामन्द्रनामः।

সপ্ত সংহাদরে ইলাবর্ত্ত দেশে আগমন।

হেন শ্রেন রসবতী, পুলকিত হয়ে মুতি, অত্যে গিয়ে দারে দাঁড়াইল। হৈত। তটে গুণধাম, তোপ দাগে অবিশ্রাম, ধনী ধুনি শুনিতে পাইল।। তদন্তরে রসময়, ভাতাগণ প্রতি কয়, পূর্ব্ব কথা করিয়ে স্মরণ। যে মতে রাফদে ববি, প্রাপ্ত হল রত্ন নিধি, বিস্তারিত সে সর কথন।। অত্এব মহাশ্র, যদি মোরে আজ্ঞা হয়. অত্যে আমি ঘাই সেই স্থলে। পরেতে রাখিয়ে তরি, কিঞ্চিত বিলম্ব করি, এস তথা তে"মরা সকলে। এত বলি বসরাজ, না করিয়ে ক্ষণ বাজি, कामिनीव निकटि हे लगा। **হেতা ধনী দাঁড়াইয়ে, আছে আশা পথ চেয়ে,** হেন কালে নাগরে দেখিল।। আনন্দ সাগরে ভাসে, আসিয়ে নাগর পাশে, কহে কত করি অভিমান।

अविका-विवास

मागरतत करत धरत, अस्मक विमय करत. আনন্দেতে হয়ে ভাসমান ॥ করি থেদ মৌন মুখে, রসবতী অতি ভূপে অপোন্তথ নির্থিয়ে ধরা । कीटन অভি भवांक्टत, यभन नश्चन नीट्स, ভাবে ধরধের জিনি ধারা ৷৷ কি কৃহিৰ মন তুথ, পেলে স্থুখ দিলে তুঃখা प्तिय स्व दुः त्यं स्वर्थान्त्र। তুঃখ নিশি অবনান, পাইয়ে জোমারে প্রাণ, সুখা গত গেল তুঃখোদর।। শুনি কামিনীর কর, ধরিয়ে ক্তে নাগর, স্থমিউ বাক্যেতে ভাষ মন। র্সিকা কামিনী ভামি, অর্সিক মত আমি, দিয়েছি হে অনেক যাতন।। অতএব ত্যাজি রোষ, ক্ষমহ সকল দেবে, হইয়ে আমারে রূপান্বিতা। শুনিয়ে মধুর বাণী, আনন্দিত হয়ে ধনী, জিজ্ঞাসিল কুশল বারতা।। ङमञ्जाद त्रमग्र, कट्ट कथा मगुम्स, যথা যাহা হইল ঘটন। ভাষ্যা ভাতা সঙ্গে করি, বাহন করিয়ে তরি, যে মতে তথায় আগসন।।

এত শুনি রসবতী, আহ্লাদিত হয়ে মতি, প্রশংসিয়ে নাগরেরে কয়।

শুনিলাম কন্মতিব, মনুষ্যের অসম্ভব, সম্ভব ভোমাতে সমুদ্য !৷

এৰপ নাগর ননে, মিন্টালাপ ছুই জনে,

করিতেছে হয়ে হর্ষিত।

হেন কালে দেই স্থলে, একত্র হয়ে সকলে, রাজপুত্রগণ উপনীত॥

দেখি তবে রসময়, কামিনীরে সমুদয়, স্বাকার পরিচয় দিল।

শুনি বাণী ব্যবহার, করে ধনী দে প্রকার। কুমার স্বারে সম্ভাবিল।

পরে লইঃয় সবাবে, ননো বিধ উপহারে.

मकरलदा कतान आहात।

ভোজনাত্তে ভবনেতে, লয়ে অতি সাদরেতে,

সভায় বসায় পুনবার !!

পরে ধনী মৃত্ত ভাষে, কহিল কুমার পাশে, আনিতে সভিনী যায়াগণে।

আর যত সমভ্যারে, আন যদি একেবারে, বড় প্রীত পাই তবে মনে॥

শুনিয়ে ধনীর বাণী, সেই ক্ষণে গুণমণি, আনিলেন সবারে সংহতি। দেখি ধনী বিনা বাংকে, জায়া সভীনির মাজে মৃত্র লাজে ধীরে ধীরে গতি।। নকলের ধরি করে, লয়ে যায় নিজপুরে,

শমাদরে বসায় আসনে।
 খাদ্য দ্রব্য আয়োজন, করিয়ে ধনী রক্ষন,
 ভোজন করায় সর্বাজনে॥

পরে হয় দিবা গত, নিশা হল সমাগত; জরিত তরিতে সবে যায়।

স্থরদেন নিশা ভাগে, কামিনীর মনো যোগে, মনোসাধ বাসনা পূরার il

বছ দিন পর যোগে, স্থযোগ স্থযোগ জোগে, যোগে যোগে কভ কথ। হয়।

নেও কত অনুযোগ, হয় যাতে ভঙ্গযোগ, অঙ্গ যোগে সব গ্রুংখ ক্ষয়॥

পরে সুরসেন বলে, রজনী প্রভাত কালে, ...
বাঞ্জা তোমা লয়ে যাব দেশ !

এইব্ৰপ ছুইজনে, কথা ৰূপবতী সনে, বিজ বলে নিশি হল শেষ।।

সপ্ত সংহাদরের স্বদেশ গমন।

প্রভাতে উঠিয়ে তবে নরেশ নন্দন। নীতি মত কৰ্ম যত কৈল সমাপন।।* जमस्दत (अधुनीदत विनदत रु.इन । মানস যা ছিল ভাহা পুৰ্নিত হইল।। षाठ्य अन श्रिस् हिन अस्कार। মল গজে চল যদি না লয় তব খন ।। পতি বাণী শুনে ধনী হয়ে সকাতর। বলে একি অধিনীরে কহ প্রাণেশ্বর ।৷ বর্থন এদেহ মম দ্বঁপেছি ভোমাতে। তব স্থাবে স্থী ছঃখ তোমার ছঃখেতে।। তাহাতে অবলা কুলবালা আমি নারী। কেমনে তোমার মত লঙ্গিবারে পারি॥ বুঝিয়ে রসিক রাজ কামিনীর মতি। দ্রুত সবে ডাকি তবে দিল অমুমতি।। যত রত্ন জহরাত আছে এনগরে। উত্তোলন কর সব জাহাজ উপরে॥ আজ্ঞা মাত্র দূতগণ নিযুক্ত হইরে। मान। माटक कामिनीटत पिल माकाइटरा।। মন আনে রসবতী ধরিল যে বেশ। সে ভাব দেখিয়ে কাম হয় প্রাণেশের।

পরে শুভক্ষণে রায় কামিনী সংহতি। আপন জাহাজে গিয়ে উঠে শীঘ্ৰগতি ৷৷ তবে যত নারী এসে একত হইল। ধরি করে সমাদরে কাছে বসাইল।। ভবে নপবর্গণ য.ইটে স্বদেটিশ। খুলিল জাহ'জ সব মনের হরিছে।। পরি ভাজ দাঁড়ে বাজ নান্ধি দাঁড়িংল। আলা আলা খোদা ভালা ডাকে নৰ্বজনে ভোল চাক মহা জাঁক হাঁকে ভূভাগণ ৷ ভোপের উপরে ভোপ দাগে কত জন।। এমতে যাইতে পথে কুমার সহার। অন্তরেতে উথলিল আমন্দ অপার । এই ৰূপ রঙ্গ রুদে দেশে আগমন। শুভ সম।চারে ভোগ দারো ভাগান।। দুত গিয়ে ভূপতিরে সমাচার দিল। শুনি ভূপতির স্থর সিদ্ধু উর্থলিল।। ভ**দন্তর পুত্রগণ মঙ্গল** কারণ। श्रात श्रात देकल नाना प्रक्रलाहत्।॥ পরে সন্ত্রীকেতে সবে গিয়ে নিকেতনে। প্রণাম করিল পিতা মাতার চরণে । পুত্রী হেরি রাণীন্বয় আর মহীপতি মাহত প্রের প্রারণ রুক্ত কর্মাত্র হাতি -

ক্রমে ক্রমে স্বাকারে বসাইয়ে কোলে। শত শত চুয় দৈন বদন কমলে।। পরে আদ্য অন্ত যত জিড্ডাসে নরেশ। শুনিলেন সুবিস্তার সমাচার শেষ।। ধন্য পুত্র হুরদেন তুমিরে আমার। চিরকাল কীন্তি যশ ঘোষিবে তোমার ॥ সপ্তম পুজের মধ্যে হইরে কনিষ্ঠ। শে কর্মা করেছ বাপু জ্যেষ্ঠ হতে শ্রেষ্ঠ।। ইফ নিগ শিষ্ট ধারা গুণী সঞ্চাণ্ডণে। রলিষ্ঠ রুণেতে বিজ্ঞ বলিষ্ঠের স্থানে॥ তদন্তর সুথে শুকে ক্মার লইরে। ভূপতীর **নমীপেতে** দি**ল** সমর্পিয়ে ॥ পুত্র পরিবার আর হুথ প্রাপ্ত হয়ে। স্থাপে কাল হরে নূপ কালে ফাঁকি দিয়ে ॥ প্রতির্গাচরণ হৃদে করিয়ে ধারণ। দ্বিজ রামলাল এন্থ করিল বর্ণন।। অশ্ব পৃষ্ঠে স্থাকর সমুদ্র দক্ষিণে। শত নিৰূপণ হল বস্থর মিলনে।। দশম রাশিতে ভোগ করে নিশাপতি। ষষ্ঠ দশ দিবা আর সপ্তমীর তিথি।।